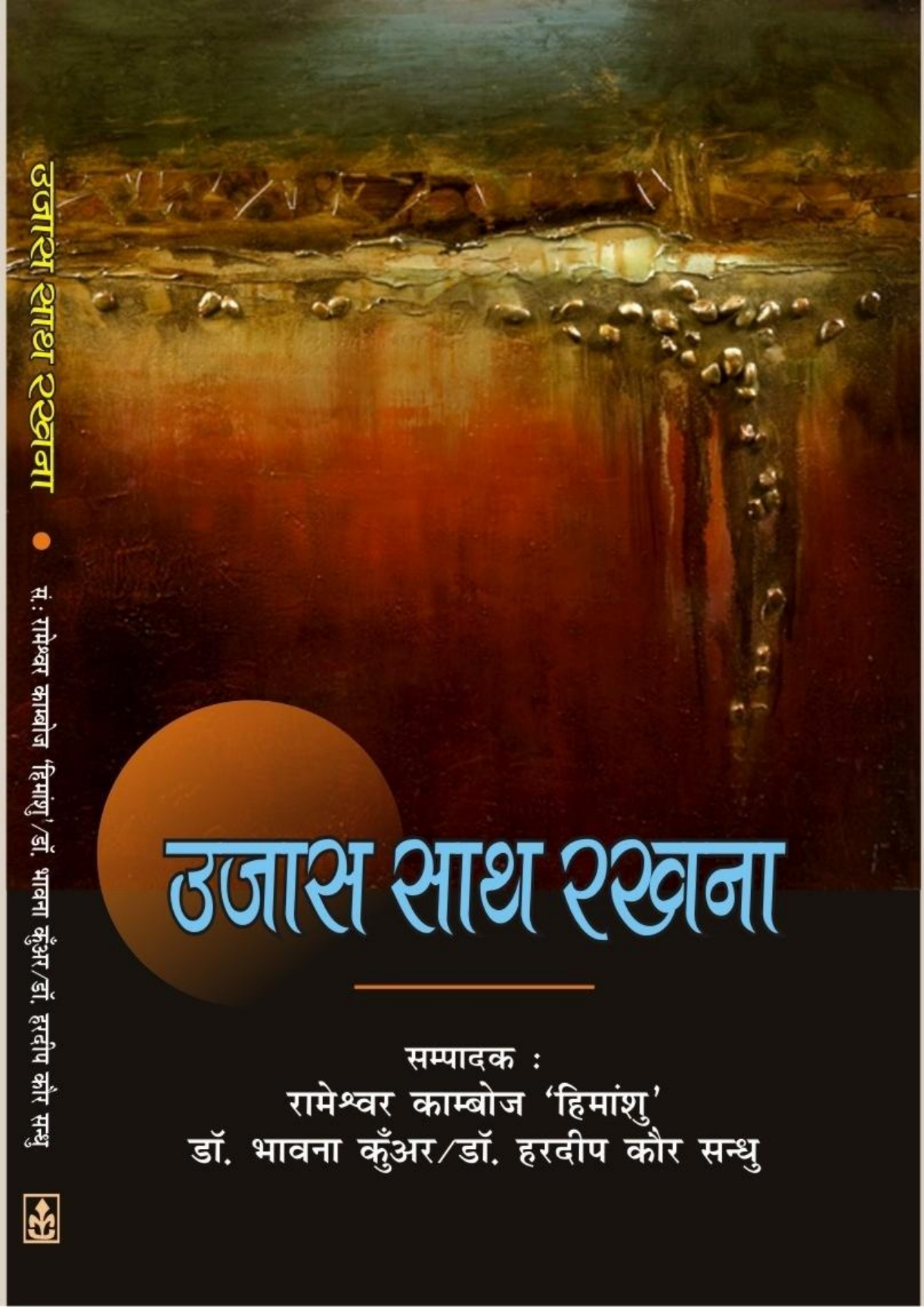

जापानी काव्य विधाओं- हाइकु, ताँका, चोका और सेदोका को लेकर कुछ नाम बड़ी तेज़ी से उभरकर सामने आए हैं, जिनमें रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', डॉ. भावना कुँअर और डॉ. हरदीप कौर सन्धु प्रमुख हैं। आपके कार्य में क्षिप्र गति के साथ एक धैर्य और नैरन्तर्य भी है, जो विशेष आकृष्ट करता है। सृजनशीलता एवं सम्पादन, दोनों स्तरों पर आप तीनों गतिशील हैं।

'उजास साथ रखना' की पाण्डुलिपि देखने का अवसर मिला। सर्वप्रथम चोकाकारों की सूची देखी तो विस्मय से भर उठी। 'उजास साथ रखना' यह एक आयोजित योजना के परिणाम स्वरूप है या महज़ इत्तफ़ाक कि संकलन में 26 में से 24 चोकाकार महिलाएँ हैं।

सभी बहुचर्चित और ऊर्जावान् रचनाकार हैं और इनकी टीम के सक्रिय सदस्य भी! रचनाएँ पढ़ना शुरू कीं तो पढ़ती चली गई। रस की उच्छल धारा में ऊभ-चूभ होकर ऐसी बही कि समय का ज्ञान ही विस्मृत हो गया।

24 कवयित्रियाँ एक साथ स्त्री-संसार; बल्कि कहूँ कि स्त्री का कविता-संसार अपनी इन्द्रधनुषी आभा बिखेरता प्रत्यक्ष हो उठा! यह दुनिया अपने इतने शेड्स लिये हुए है कि पाठक गिनते हुए भी थक जाएगा! कोई पहलू अनछुआ नहीं, कोई अक्स झिलमिलाने से छूटा नहीं, कोई गली या वीथिका ऐसी नहीं, जहाँ इनका प्रवेश न हुआ हो!

- डॉ. सुधा गुप्ता

उजास साथ रखना

(26 चर्चित कवियों के चोका)

उजास
साथ रखना

(चोका-संग्रह)

सम्पादक :
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. भावना कुँअर
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 2664 5812 / 9818988613
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

•

मूल्य : 200.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2013 © रचनाकार

UJAAS SAATH RAKHNA (Choka) Ed.by Rameshwar Kamboj 'Himanshu', Dr. Bhawna Kunwar and Dr. Hardeep Kaur Sandhu

---

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

हमारी बात

चोका (लम्बी कविता) पहली से तेरहवीं शताब्दी में जापानी काव्य विधा में महाकाव्य की कथा-कथन शैली रही है। मूलत: चोका गाए जाते रहे हैं। चोका का वाचन उच्च स्वर में किया जाता रहा है। यह प्राय: वर्णनात्मक रहा है। इसको एक ही कवि रचता है। इसके वर्णक्रम (जापानी के अनुसार ओंजि) का नियम इस प्रकार है- 5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7. .. और अन्त में एक ताँका जोड़ दीजिए। या यों समझ लीजिए कि समापन करते समय इस क्रम के अन्त में 7 वर्ण की एक और पंक्ति जोड़ दीजिए अर्थात् 5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+5+7+(5+7+5+7+7=ताँका)।

इस अन्त में जोड़े जाने वाले ताँका से पहले कविता की लम्बाई की सीमा नहीं है। इस कविता में मन के पूरे भाव आ सकते हैं। इनका कुल पंक्तियों का योग सदा विषम संख्या यानी 9-11-25-27-29-31 इत्यादि ही होगा।

विषय के अनुरूप काव्यरूप का चयन सबसे प्रमुख है। कुछ लोग काव्यरूप को ही साध्य मानकर उसके शिल्प या बनावट को ही सब कुछ मान बैठते हैं। ग़ज़ल से लेकर ताँका, हाइकु तक इसका अंधानुकरण देखा जा सकता है। जो कुछ भी सूझा उसी में भरने की कोशिश करते हैं। बनावट से आगे बढ़कर बुनावट पर ध्यान देना ज़रूरी है। काव्य उसमें है या नहीं, इसको पलटकर देखने की ज़रूरत है। हृदय से निकला काव्य अपना स्वरूप आप तलाश लेता है। 'ओक भर किरनें' (डॉ. सुधा गुप्ता) और 'मिले किनारे' (रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' एवं डॉ. हरदीप कौर सन्धु) संग्रहों के बाद चोका के क्षेत्र में सम्पादित संग्रह का यह प्रथम प्रयास है।

चोका की शुरुआत 31 मई 2011 को हिन्दी हाइकु पर सुधा जी के चोका 'पीले गुलाब' से की गई। इसके बाद त्रिवेणी पर 18 अक्तूबर से डॉ. हरदीप कौर सन्धु के चोका से इसको नियमित किया गया। अभी तक इस पर

चोका की 76 पोस्ट हो चुकी हैं। त्रिवेणी पर बहुत से स्थापित और कुछ नए रचनाकारों ने चोका को नया स्वरूप प्रदान किया। यह नया रूप है उनके हृदयग्राही काव्य की चोका में प्रस्तुति। डॉ. सुधा गुप्ता जी के बाद इसमें पुराने और नए कई नाम जुड़े जिनमें रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', डॉ. हरदीप कौर सन्धु, डॉ. भावना कुँअर, रचना श्रीवास्तव, कमला निखुर्पा, डॉ. जेन्नी शबनम, डॉ. अनीता कपूर, डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा, डॉ. सरस्वती माथुर, डॉ. अमिता कौण्डल, प्रियंका गुप्ता, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, तुहिना रंजन, भावना सक्सेना, डॉ. उर्मिला अग्रवाल, सुशीला शिवराण, डॉ. आरती स्मित, शशि पाधा, हरकीरत 'हीर', वरिन्दरजीत सिंह बराड़, अनिता ललित आदि प्रमुख हैं।

यह एक संयोग ही है कि 'उजास साथ रखना' संग्रह के रचनाकार अधिकतम महिलाएँ ही हैं। त्रिवेणी का मंच सबके लिए खुला है लेकिन प्रकाशन हेतु यदि अच्छे चोका आएँगे ही नहीं तो क्या किया जाए? सबकी अपनी अभिरुचियाँ हैं, अपनी सीमाएँ हैं, अपने अनुभव हैं। हम तीनों ने इसके सम्पादन में लगभग छह महीने अधिक लगा दिए हैं; ताकि हिन्दी के इस प्रथम संग्रह को बेहतर ढंग से सम्पादित किया जा सके। कमियों का रह जाना स्वाभाविक है। आखिर कमियाँ ही तो हमारे सीखने का आधार बनती हैं। आपको यदि 26 कवियों की 126 में से कुछ चोका कविताएँ पसन्द आईं तो हम समझेंगे कि हमारा प्रयास सफल हो गया है।

इस संग्रह की भूमिका लिखने के लिए हम दीदी डॉ. सुधा गुप्ता जी के बहुत आभारी हैं। वे हमेशा हमको कुछ नया करने की प्रेरणा देती रहती हैं। हमारे आत्मीय रचनाकारों ने अपने असीम स्नेह के कारण सदा हमसे सहयोग किया है। वे हमारी वास्तविक और रचनात्मक शक्ति हैं, उनका भी आभार!

अयन प्रकाशन के भाई भूपाल सूद गुणात्मक प्रकाशन से हर संग्रह को निखार देते हैं, उनके हम कृतज्ञ हैं।

- सम्पादक त्रय

20 फरवरी,2013

उजास साथ रखना

जापानी काव्य विधाओं- हाइकु, ताँका, चोका और सेदोका को लेकर कुछ नाम बड़ी तेज़ी से उभरकर सामने आए हैं, जिनमें रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', डॉ.भावना कुँअर और डॉ. हरदीप कौर सन्धु प्रमुख हैं। आपके कार्य में क्षिप्र गति के साथ एक धैर्य और नैरन्तर्य भी है, जो विशेष आकृष्ट करता है। सृजनशीलता एवं सम्पादन, दोनों स्तरों पर आप तीनों गतिशील हैं। अन्तर्जाल पर 'हिन्दी हाइकु' तथा 'त्रिवेणी' ब्लॉग पर आपकी सक्रियता और लोकप्रियता किसी से छिपी नहीं है। प्रकाशन की सूची पिछले दो साल में पर्याप्त विशद एवं प्रशंसनीय है। अभी हाल में इनके सम्पादन में चोका-संकलन प्रकाशन हेतु प्रस्तुत है।

'उजास साथ रखना' की पाण्डुलिपि देखने का अवसर मिला। सर्वप्रथम चोकाकारों की सूची देखी तो विस्मय से भर उठी। 'उजास साथ रखना' यह एक आयोजित योजना के परिणाम स्वरूप है या महज़ इत्तफ़ाक कि संकलन में 26 में से 24 चोकाकार महिलाएँ हैं।

सभी बहुचर्चित और ऊर्जावान् रचनाकार हैं और इनकी टीम के सक्रिय सदस्य भी! रचनाएँ पढ़ना शुरू कीं तो पढ़ती चली गई। रस की उच्छल धारा में ऊभ-चूभ होकर ऐसी बही कि समय का ज्ञान ही विस्मृत हो गया।

24 कवयित्रियाँ एक साथ स्त्री-संसार; बल्कि कहूँ कि स्त्री का कविता-संसार अपनी इन्द्रधनुषी आभा बिखेरता प्रत्यक्ष हो उठा! यह दुनिया अपने इतने शेड्स लिये हुए है कि पाठक गिनते हुए भी थक जाएगा! कोई पहलू अनछुआ नहीं, कोई अक्स झिलमिलाने से छूटा नहीं, कोई गली या वीथिका ऐसी नहीं, जहाँ इनका प्रवेश न हुआ हो!

जीवन के लगभग आठ दशक की सुदीर्घ यात्रा कर चुकी डॉ. सुधा गुप्ता की 'कठपुतली', 'रिश्तों की रफ़ू' और 'मुकम्मिल औरत' चोका कविताएँ

जहाँ उनके अपने युग का दर्द समेटे हैं, डॉ.भावना कुँअर की 'मेरी प्रीत का चटख रंग' और 'नन्ही परी' एक परिपक्व युवा हृदय का आवेग और आह्लाद प्रत्यक्ष कर देती है। डॉ. हरदीप कौर सन्धु का संवेदनशील हृदय 'मन का आँगन', 'दिल का द्वार', 'विदा की घड़ी', 'चुप की नदी' में भावनाओं के बिल्कुल नए रंग-रूप और सज्जा लेकर आया है। रचना श्रीवास्तव की लेखनी की पकड़ विस्मयकारी है! 'देखा है मैंने' में जीवन के विविधवर्णी चित्र, 'तेरी कोख में' में आज की ज्वलन्त समस्या और 'विदेशी धरा' में प्रवासी भारतीय महिला का दर्द तिलमिलाकर रख देता है। कमला निखुर्पा की चोका कविताएँ 'परीक्षा भवन में' और 'सोनपरी' नवीन भाव-भंगिमा लिये हैं। डॉ. जेन्नी शबनम 'नया घोंसला' में नवनिर्माण और कभी न चुकने वाली ऊर्जा की बात करती हैं तो एक सचेत मानवी के रूप में 'अजब ये दुनिया' में पर्यावरण-चिन्ता को व्यक्त करती हैं। वरिष्ठ कवयित्री डॉ. मिथिलेश दीक्षित की कविता 'धूप' जहाँ सहज घरेलू मध्यवर्गीय परिवेश का मोहक, हृदयस्पर्शी चित्र उकेरती है, वहीं प्रियंका गुप्ता की 'बचपन के दिन' सभी पाठकों को अतीत के शैशव-सम्मोहन में बाँध लेती है। डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा की 'सोनचिरैया' को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करके नारी जीवन का लक्ष्य अमृत तत्त्व वितरित करने को घोषित करती है। 'पितरौ वन्दे' उनकी ऐसी सशक्त कविता है, जिसमें आज की वृद्ध पीढ़ी की उपेक्षा, तिरस्कार और वेदना की ओर संकेत किया गया है। भावना सक्सेना की 'स्त्री' संघर्ष झेलती, 'धूप की डोरियों से नेह चादर बुनती' अदम्य जिजीविषा की कथा है। तुहिना रंजन की 'नन्ही-सी कली' में आती नई पीढ़ी का भरपूर स्वागत है!

वरिष्ठ कवयित्री डॉ. उर्मिला अग्रवाल की 'वक़्त के गुलाम' समय की शाश्वत सत्ता बताती है तो 'अकेलापन' वार्धक्य की त्रासदी को यथार्थ के धरातल पर अंकित करती है। हरकीरत 'हीर' का एकमात्र चोका 'लिख दो पाती' नारी हृदय के सहज समर्पण और अनन्य निष्ठा की करुणाभरी कहानी कहता है। अनुपमा त्रिपाठी 'लहर चली' के माध्यम से नारी-जीवन के उतार-चढ़ाव, उत्कट जिजीविषा और अस्मिता को बचाए रखने के संघर्ष को रूपायित करती है। सुशीला शिवराण का चोका 'सावन-झड़ी' में प्रिय के पास न होने के सूनेपन की मार्मिक उदासी को अत्यन्त सहज भाव से प्रस्तुत किया है। डॉ. आरती स्मित 'ठूँठ' को प्रतीक रूप में प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त

सशक्त ढंग से वयोवृद्ध पीढ़ी के भविष्य पर प्रश्न चिह्न लगाती है। शशि पाधा 'दु:ख का घड़ा' में दु:ख के शूल को सुख के फूल में परिवर्तित कर देने का अचूक मंत्र अपनाती हैं, यही नारीत्व की चरम सार्थकता है। डॉ. अनीता कपूर का चोका 'जन्मों की गाथा हूँ मैं' तथा अनिता ललित का लम्बा चोका 'घर की तलाश' नारी की व्यथा को रेखांकित करते हैं तो 'तुमने कहा' में डॉ. अमिता कौण्डल ने नारी के समर्पण को मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। वरिन्दरजीत सिंह बराड़ ने 'गरीब की ज़िन्दगी' में टुकड़ों-टुकड़ों में मिलने वाली खुशी का सारगर्भित चित्रण किया है।

कृष्णा वर्मा के चोका प्रकृति के विविध रूपों को चित्रित करते हैं तो ज्योतिर्मयी पन्त और शशि पुरवार के चोका परिवार और प्रेम के सन्तुलन की अनवरत तलाश करते नज़र आते हैं।

समापन में हिमांशु की चोका कविताओं का ज़िक्र ज़रूरी है। हिमांशु की सभी कविताएँ इतनी भाव-प्रवण हैं और सहज अभिव्यक्ति से ओत-प्रोत हैं कि किसी एक दो पर अँगुली रखना मेरे लिए दु:साध्य है, फिर भी 'पीर–तरी', 'बिखर जाऊँगा', 'वहाँ मुझे पाओगे' शीर्षक कविताएँ विशेष मोहक बन पड़ी हैं। 'आँसू की गठरिया' को मील का पत्थर कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी। इसका कारण है, धारा में बहता जाता प्राणी अपनी पीड़ा में डूबने की वेदना व्यक्त करे, यह स्वाभाविक है, किन्तु तट पर खड़ा प्राणी डूबते व्यक्ति की छटपटाहट और विकलता को इतने मार्मिक, यथार्थ, जीवन्त रूप में प्रस्तुत कर दे, यह विस्मयकारी है! 'आँसू की गठरिया' कविता में ऐसा ही हुआ है। नारी त्रासदी की 'कैप्सूल कविता'।

कुल मिलाकर संग्रह की अधिकतर कविताएँ एक अनवरत तलाश हैं- नारी अस्मिता की, प्रतिष्ठा और सम्मान की, सपनों-आकांक्षाओं की और नव सृजन से लबालब भविष्य की। सम्पादक त्रयी को इस उत्कृष्ट संचयन के लिए अनेकानेक साधुवाद!

23 जनवरी, 2013

- डॉ. सुधा गुप्ता
120 बी / 2, साकेत मेरठ-252003

अनुक्रम

1. डॉ. सुधा गुप्ता
2. डॉ. भावना कुँअर
3. डॉ. हरदीप कौर सन्धु
4. रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
5. कमला निखुर्पा
6. रचना श्रीवास्तव
7. डॉ. जेन्नी शबनम
8. डॉ. मिथिलेश दीक्षित
9. प्रियंका गुप्ता
10. डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा
11. भावना सक्सेना
12. तुहिना रंजन
13. डॉ. उर्मिला अग्रवाल
14. हरकीरत 'हीर'
15. अनुपमा त्रिपाठी
16. डॉ. आरती स्मित
17. सुशीला शिवराण
18. शशि पाधा
19. सुदर्शन रत्नाकर

20. डॉ. अनीता कपूर
21. वरिन्दरजीत सिंह बराड़
22. डॉ. अमिता कौण्डल
23. अनिता ललित
24. कृष्णा वर्मा
25. ज्योतिर्मयी पन्त
26. शशि पुरवार

1. डॉ. सुधा गुप्ता

1. नन्ही गौरैया

आँगन आती
बच्चों की थी लाडली
चीं-चीं गौरैया
घर-घर में जाती
बाजरा खाती
पानी पी, उड़ जाती
फुर्र गौरैया
फुदकती तार पे
शोख़ गौरैया
हर घर की शोभा
नन्ही गौरैया
बाल-कथा नायिका
रही गौरैया
ये भला कब हुआ
कैसे-क्यों हुआ
जाने कहाँ खो गई
प्यारी गौरैया
छज्जे और आँगन
मुँडेर सूनी
गायब है गौरैया
पेड़ जो कटे
उजड़े आशियाने
दु:खी गौरैया
खोये मोखे-झरोखे
बने न नीड़
बड़ी डरी-सहमी
रोती गौरैया
रे मानव बेवफ़ा!
छीने हैं घर
ख़तरे में गौरैया
कैसे बचेगी
कभी सोचा भी तूने
निष्ठुर मन
तू बड़ा बेरहम
सुन पाहन!
लुप्त होगी गौरैया
शुभांगी वो गौरैया। ❑

2. साथ रखना

थोड़ी-सी आस
और थोड़ी उजास
साथ रखना
कस कर बाँधना
आँचल-छोर
कभी गुम न जाए
याद रखना
राह में घिरे रात
सूझता न हो
निज हाथ को हाथ
काम आएगी,
खूँट को खोल लेना
ढारस पाना
औ' रास्ता ढूँढ़ लेना
थोड़ी मिठास
थोड़ी-सी चिकनास
बचा रखना
जीवन-मरुथल
लील न जाए
जरा ख़्याल रखना
वक़्त की मार
जीना दूभर करे
उपेक्षा और
रुखाई आस पास
करें आवास
जब परवशता
कड़वे बोल
डंक चुभाने लगें
ख़ास अपने
मुँह चुराने लगें
याद रखना :
भूल न जाना कहीं
काम आएगी
होठों पे खिला लेना
शहद - फूल
सँजो रखे नेह से
मन का दीप
शान्त हो, 'बाल' लेना
रास्ता निकाल लेना। ❑

3. एक कहानी

एक कहानी
है सदियों पुरानी
कहे थी नानी
एक रही चिड़िया
तिनके जोड़
घोंसला था बनाया
आँधी जो आई
सपने हुए चूर
हार न मानी
चिड़िया तो आदत
से मजबूर
उड़-उड़ के जाए
तिनके लाए
चाहे पास या दूर
उलझे धागे
कतरन, टुकड़े
सब मंजूर
घास-पत्ते बिछा के
नर्म बिछौना
कर लेगी तैयार
दो जन मिल
परिवार बनेगा
फिर हों चार
आशा और ममता
अथक सेवा
हर पल तैयार
थोड़े दिनों में
चीं-चीं के स्वरों, नीड़
हो गुलजार
पेड़ की शाखाएँ भी
हँस देखेंगी
ममता का त्योहार
दाना-दुनका
जुटाने में चिड़िया
तो होगी पस्त
नटखट चोंगले
भर पेट खा
रखेंगे सदा मस्त
वक्त बदला
जवान सपनों ने
गजब ढाया
हवा में पंख तोल
मुक्त नभ में
ऐसी भरी उड़ान
लौट न देखा
राह देख के हारी
माँ परेशान
अब नीड़ था खाली

घिरी अकेली
हुई भारी थकान
यही कहानी
चलती जाती आई
यही दस्तूर

समझे न दुनिया
न चिड़िया का
न किसी चोंगले का
कोई कुसूर
इतना ही नाता है
फिर भी तो भाता है। ❑

4. कठपुतली

कठपुतली
बाज़ार में सजी थी
खुश, प्रस्तुत
कि कोई ख़रीदार
आए, ले जाए
उसके तन-बँधे
डोरे झटके
हँसा, रुला उसको
रिझा, नचाए
मन मर्जी चलाए
ले गया कोई
गुलाबी साफ़ा उसे
कठपुतली
खुश-खुश नाचती
ख़रीदार की

भ्रू-भंगिमा देख के
अपना तन
तोड़ती-मरोड़ती
थिरकती थी
बल खा-खा जाती थी
ऐसा करते
बहुत दिन बीते
जोड़ चटखे़
नसें भी टूट गईं
बिखर गईं
वो 'चीथड़ा' हो गई
वक्त की मार :
टूटी-फूटी चीज़ों का
भला क्या काम?
सो 'घूरे' फेंकी गई
अब विश्राम में है। ❑

5. एक कविता

मैंने लिखी थी
एक कविता 'खुशी'
तुम्हें दिखाई
तुमने सरसरी
निगाह डाली
उचाट नज़र से
यूँ-ही सा देखा
तोड़-मसल कर
डस्ट-बिन में
उछाल कर फेंका
'खुशी' मरी थी
मैंने फिर लिखी थी
एक कविता
'उदास' थी कविता
बड़ी प्यारी-सी
जतन से सँवारा
तुम्हें दिखाया
इस बार तुमने
घोर उपेक्षा
और फालतूपन
की चीज़ जान
चिन्दी-चिन्दी करके
बिखेर फेंकी
मेरा श्रम, लगन
'खुशी', 'उदासी'
दोनों दफ़्न हो गईं
हार न मानी
मैंने फिर लिखी थी
एक कविता
'खुशी' या 'उदासी' थी
ये पता नहीं
शायद दोनों साथ
हमजोली थीं
कविता लिखकर
चालाकी करी
चुपके से तहाया
नज़र बचा
दिल की दराज़ में
सरका दिया
तुम्हें पता न चला
वहाँ महफूज़ है। ❑

6. रिश्तों की रफ़ू

सूरज संग
जलता मेरा दिन
सितारों संग
जागती मेरी रात
हाथ में सुई,
आस का डोरा पिरो
रिश्तों को रफ़ू
करने में जुटी मैं
'पिराती' आँखों
लगातार सिलती
हाँफती-सी मैं
सब कुछ भुला के
रफ़ू करती :
इधर से जुड़ा तो
वहाँ उधड़ा
उधर जुड़ गया
तो यहाँ खुला
कैसी कशमकश!
क्या मुसीबत!!
बोसीदा सारे रिश्ते
तार-तार थे
जर्जरित, खोखले
घुन चुके थे
जुड़ते भला कैसे ?
दम नहीं था
टाँके पर टाँकों की
गुठली बनी
बड़ी बदसूरत
मुझे चिढ़ाती
बेकार मशक्कत!
बेज़ार हुई
आख़िर उठ पड़ी
हाथ मार के
सूरज को बुझाया
उलट डाली
सितारों की बिसात
लपक कर
दरवाज़ा खोल के
बाहर आई
सुई कुएँ में फेंकी
डोरा 'घूरे' पे।
फटे-टूटे-उधड़े
रिश्ते उतार
आज़ाद हो गई मैं
जैसी थी, बस
वैसी ही चल पड़ी
एक अकेली।
रिश्ते पहनना ही

छोड़ चुकी थी।
बोझा उठाते कन्धे
हल्के हो गए।
आँखें भर आईं थीं
चैन की साँस ली थी। ❑

7. कोई नाम था

कोई नाम था
हज़ारों नामों में से
मुझे भा गया
बचपन में मैंने
केशों में गूँथा
जब किशोरी हुई
बड़े चाव से
लॉकेट में पिरोया
पहन लिया
और बड़ी होने पर
होश जो आया
मन की हर खूँट
बाँध लिया था
बस वो एक नाम
सोते-जागते
कभी भूलता नहीं
'गोदना' गुदा
रोम-रोम उकेरा
वो एक नाम
बड़ा ही अभिराम
सिर्फ़ 'नाम' था
जाने कब, क्यों, कैसे
बन गया था 'राम'। ❑

8. रे सिरजनहार

कनेर फूल :
रंग तो शोख़ दिया
गंध गायब
बेला, जुही, चमेली :
सुगंध - घट
भरे, उँडेल दिये
रंग छीन के
रूप की धूम मची
राजा गुलाब :
मख़मली पत्तियाँ
नूर औ' आब
मतवाली सुगंध

काँटे अनन्त
चम्पा को अनमोल
बाँटा जी खोल
रंग, रूप, सुवास
प्रेम चुरा के
रे सिरजनहार!

अद्‌भुत है तू
तेरी बलिहारी है
जादू-तराजू
बड़ा न्यायकारी रे
नहीं देता तू
सबको सब कुछ
कमी कुछ न कुछ। ❑

9. बेला के फूल

बेला के फूल
किसी सलोनी भोर
मेरी मेज पे
कोई रख गया था
आकर देखा :
सिर्फ चन्द फूल थे
मोती-सी आब
मह-मह गमक
बेला-फूलों ने
सहसा लुभा लिया
प्यार से सूँघा
हाथ में ले सराहा
क्षण भर में
शैशव लौट आया
मेरे घर थे

बेला के कई झाड़
भोर होते ही
सबसे पहले मैं
पहुँच जाती
उन सबके पास
ढेर के ढेर
खिले पड़े होते थे
बेला के फूल
गोरे गदबदे वे
मोह लेते थे
जीवन बीत गया
वैसी सुगंध
और वैसी ताज़गी
फिर न मिली
अनुपम थे फूल
अनोखा काल-खण्ड। ❑

10. नभ से पूछो

नभ से पूछो
बिछुड़ने का दर्द
सहता है जो
हर काली रात में
कब से टँगा
औंधा, अकेला, मौन
मुद्दत हुई
एक वही कहानी
कोई न कोई
प्यारा उसका तारा
सदा के लिए
फुलझड़ी बिखरा
जुदा हो जाता
साक्षी बना असंग
मूक, निरीह!
टूटने का दु:ख भी
चुप सहता
थोड़ी देर जलता
फिर राख हो जाता ❑

11. खोई है धुन

संगिनी खोई
वृद्ध विधुर अब
रहा अकेला
एकाकी जीवन का
दर्द झेलता
कौन यहाँ जो पूछे
मन की पीड़ा
चुप-चुप दहता
गूँगा बन वो
निज मर्म-व्रणों से
रहे खेलता
चोटिल तन-मन
बच्चे उसके
मस्त-व्यस्त रहते
निज नीड़ों में
अब घुटता दम
अंधकूप में
रहे वह भीड़ों में
कटते नहीं
जीवन साथी बिन
उदास दिन
टूटी-फूटी बाँसुरी
पड़ी, खोई है धुन। ❑

12. बाती बोली यूँ

बाती बोली यूँ
मुझसे मत पूछो
मैं जलती क्यों
स्नेह भरे दीपक
जा कूदी थी मैं
तन-मन भिगोया
प्रेम-कुण्ड में
ऐसी डुबकी मारी
सुधि बिसरा
हुई 'उसी' की सारी
गहरे डूबी
कुछ बूझ न पाई
वजूद खोया
भोला-सा मेरा मन
रूई - उजला
नेह में भीगा तन
'लौ' ने जो छुआ
भक्क से जल उठी
प्रेम-मगन
तन-मन अगन
बस तभी से
रात-दिन जली मैं
मेरा कहना
मानो तुम बहना
प्रेम-प्रीत में
अतिशय डूबना
बहुत बुरा
कभी न डूबो पूरे
नित्य जलोगे
सदा पीर सहोगे
मैं बाती सहती ज्यों। ❑

13. आषाढ़ : एक दिन

शुभ प्रभात
आँख खुली तो देखा
प्राची पहने
गोटा-किनारी टँकी
मेघिल साड़ी
झिलमिल करती
रूप सलोना
किया है प्रकृति ने
जादू या टोना
मन्द मुस्कान लिये

हवा बहती
छूटी कुढ़न जी की
ताप-उमस
रख के कहीं भूली
आ घिरे नभ
मेघदूत सजीले
बिना विलम्ब
यक्ष-मन हरषा
प्रिया पाने को
फिर-फिर तरसा
मिले तो कैसे?
दूरियाँ अनन्त हैं

विरही मन
शाप ग्रस्त यक्ष ने
भेजा सन्देसा :
'प्राण प्रिये! तू सुन
बड़े कठिन
कटें न पल-छिन
कैसे धरूँ मैं
प्राण ये तेरे बिन'
हुए द्रवित
उमड़-घुमड़ के
चले हैं मेघ
बूँदों की रिमझिम
आषाढ़ : एक दिन ❑

14. तुमसे कह

तुमसे कह
सुख-दु:ख की बात
पल भर में
मन हल्का हो जाता
कैसे बना ये
जन्म-जन्म का नाता
न कोई रिश्ता
न ही कोई सम्बन्ध
न हस्ताक्षर
न कोई अनुबन्ध

सगे होने का
जो भी दम भरते
चारों तरफ़
चींटे से थे चिपके
जिनके लिए
कुरबान कर दी
हँसते हुए
अनमोल साँसों की
हर कमाई
आज उन्हीं रिश्तों ने

धूल चटाई
रूठ गये, ऐंठे हैं
हाथ में छुरी
'ज़िबह' को बैठे हैं
असहाय मैं
परकटा परिन्दा
धरा पे गिरा
सान्त्वना का दो बूँद
जल पाने को
तरस रह जाता,
तृषित प्राण
चातक-सी रटना
नित्य लगाता
'एकमेव शरणं'
बस, तुम्हीं हो
जहाँ सुकून पाता
आत्मा के सखा!
तुम्हारा मेरा सदा
जन्म-जन्म का नाता ❑

15. वर्षा की मनुहार

वर्षा को भेजे
बुलावे, मनुहार
आई मायके
मान-मनौअल से
बड़ी ठसक
'ऊँचे' घर ब्याही है
वर्षा बिटिया
सबकी दुलारी है
कड़े मिज़ाज
चार दिन को आती
हँसा-रुला के
'नखरे' दिखा जाती
तीज मनाने
आई बिटिया रानी
हिंडोला झूल
राखी-बन्धन मना
थोड़े दिन में
'विदाई' ले, जाएगी
'अपने घर'
धूप सदा 'बेचारी'
क़िस्मत-मारी
मायके पड़ी रहे
तो कौन गिने?
सब ही अनखाते
बस दो मास
पूस-माह में मान

धूप को मिले
पिया-घर जो बसे
यही है राज़
सजती हैं बेटियाँ
'अपने घर'
मालकिन बनके
ज़्यादा जो रहें,
माँ-बाप पर 'बोझ'
बनें बेटियाँ
'मान' खो बैठती हैं
मर्म ये जाना
चार दिन मायके
रहने आती
मुदित कर जाती
सबके मन भाती। ❑

16. मुकम्मिल औरत

बहुत खोजे
मैंने नारी के चित्र
सदियों पूर्व
से आज तक बने
सभी शैलियाँ
सौन्दर्य उकेरतीं
पूर्व-पश्चिम
चित्रावली कोई हो
नासिका, आँखें
क्षीण कटि, कपोल
वक्ष सुडौल
मृणाल-सी भुजाएँ
यही सब तो!
क्लियोपेट्रा या फिर
हो मोनालिसा
सीता हो या राधिका
चारु सौन्दर्य!
चरम कमनीय!!
रूप-माधुरी!!!
मेरी खोज जारी है
प्रज्ञा-दमक
बुद्धिमत्ता-झलक
जिसे देख के
'समूची औरत' का
अहसास हो!
नहीं, कहीं न पाई
ऐसी तस्वीर
जो मेरे मन बसी
दु:खी, हताश
सोचती रही यही -

कि क्यों किसी ने
आज तक बनाया
न ऐसा चित्र
जो औरत को देता
वह 'मुकाम'
जो उसे पाना था
उदासी छँटी
हँसी का झरना था
कि फूट चला
सभी नारी-चित्रों ने
बात ये कही-
डरता है पुरुष
स्त्री के तेज से
बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा से
'कठपुतली'
सजाकर रखना
आसान होता
किन्तु बड़ा 'कठिन'
'झेलना' स्त्री को
उसके 'तेज' के साथ
इसीलिए तो
रूप का 'भुलावा' दे
वंचित कर
उसकी अस्मिता से
ठगता रहा
सदा से ही पुरुष
बड़ी 'साज़िश'
सबसे बड़ा 'धोखा'
है ये अनोखा
'मुकम्मिल' औरत
चित्र में भी नहीं है। ❑

2. डॉ. भावना कुँअर

1. मेरी प्रीत का चटख रंग

पहले रँगो
फिर उतार फेंको
भाए न मुझे
छलिया-सी बहार
पल का प्यार।
समा के रखो तुम
गहराई से
मन के भीतर यूँ
कि टूटे न ये
किसी भी पहरे से
मौसमी प्यार।
भिगोकर जाए यूँ
गहरे तक
मन और तन को,
कड़ी धूप भी
पिघलाए न प्यार।
ऐसे चढ़े ये
प्रीत का पक्का रंग
उतरे न जो
चाहे लाखों हों जन्म
महके यूँ ही
जैसे फूलों के रंग।
दुआ करूँ मैं
तेरी मेरी प्रीत का
चटख रंग
यूँ ही फले औ फूले
मिटा न सकें
दुनिया के ये लोग
बेदर्द बेरहम। ❑

2. ये खामोशियाँ

ये खामोशियाँ
डुबो गईं मुझको
दर्द से भरी
गहन औ' अँधेरी
कोठरियों में।
गूँजती ही रहती
मेरी साँसों में
प्यार-रंग में रँगी
खुशबू-भरी
जानी पहचानी-सी
बावरी धुन।
छलिया बन आए
चुरा ले जाए
मेरे लबों की हँसी
दे जाए मुझे
आँसुओं की सौगात
कैसा अजीब प्यार! ❑

3. जेठ की धूप

बनकर दुश्मन
जलाती तन
बिगाड़े सब रिश्ते।
बाज न आती
आग तक लगाती
न घबराती
हैं सब ही पिसते।
पूरे जंगल
धू-धू कर जलते
मूक रहते
हर दर्द सहते।
नन्हे-से पौधे
माँगते जब पानी
बनाकर वो
भाप जैसे उड़ाती।
गर्व करती
खूब ही अकड़ती
न ही थकती
पल भर में फिर
गर्म साँसें भरती। ❑

4. बिछोह-घड़ी

बिछोह-घड़ी
सँजोती जाऊँ आँसू
मन भीतर
भरी मन-गागर।
प्रतीक्षारत
निहारती हूँ पथ
सँभालूँ कैसे
उमड़ता सागर।

मिलन-घड़ी
रोके न रुक पाए
कँपकँपाती
सुबकियों की छड़ी।
छलक उठा
छल-छल करके
बिन बोले ही
सदियों से जमा वो
अँखियों का सागर। ❑

5. नन्ही-सी परी

नन्ही-सी परी
गुलाब पाँखुरी-सी
आई जमीं पे
झूम उठा आँगन
महकी हँसी
रोशन होने लगा
बुझा-सा मन
भर गई फिर से
सूनी वो गोद
प्यारी सी वो मुस्कान
हरने लगी
मन का सूनापन

लगने लगा
प्यारा अब जीवन
फिर से जागीं
सोई वो तमन्नाएँ
झूमने लगा
नन्हे-से हाथों संग
बन मयूर
झुलसा हुआ मन
दिखने लगीं
दबी संवेदनाएँ
खिलने लगीं
मेरे भी लबों पर

रंग-बिरंगी
कलियों–सी कोमल
हवा–सी नर्म
पानी–जैसी तरल
रात रानी की
ख़ुशबू से नहाई
नये छंदों से
सुरों को सजाती–सी
प्यारी-प्यारी लोरियाँ। ❑

6. बरसों बाद

बरसों बाद
मेरे मन–आँगन
महका प्यार
झूम उठा आसमाँ
खिला संसार।
मन की कलियाँ भी
खिलने लगीं
चेहरे पे रंगत
दिखने लगी
कोयल की आवाज़
वर्षा की धुन
भौंरे की गुन-गुन
हवा के गीत
झरनों का संगीत
चाँद का आना
सूरज का छिपना
नदी का शोर
खिलखिलाती भोर
अँधेरी रात
तारों के संग बात
जुगनुओं का
ऐसे टिमटिमाना
तितली संग
दूर देश में जाना
गाई धुन को
फिर गुनगुनाना
लिखी डायरी
बार-बार छिपाना
उठती पींगें
सावन के भी गीत
ख़ुशबुओं का
मदहोश करना
सब भाने लगा है। ❑

7. याद-परिंदे

कहाँ से आए
ये उड़ते-उड़ाते
याद–परिंदे
हम कैसे बताएँ!
भीगी पलकें
उदासियों का चोला
पहने बैठीं
चुपके से आकर
देखो तो ज़रा
हवाओं के ये झोंके
आँखों से कैसे
यूँ मोती चुराकर
आसमान सजाएँ। ❑

8. अपने

छलने लगे
बनकर अपने
कल तक थे
वे घिनौने सपने
लगाया ऐसे
चेहरे पे नक़ाब
मुश्किल बनी
उनकी पहचान
नोचने लगे
अंदर ही अंदर
उस पौधे को
जो लगाया दोनों ने
पाने लगा था
सुनहरा-सा रूप
फूटने लगी
भावनाओं की शाखा
होने लगी थी
जड़ें भी मज़बूत
बसने लगा
साँसों के संग प्यार
पाने लगा था
अपनी मंज़िल को
आ ही गया था
जीवन का पड़ाव
अचानक ही
वेश बदलकर
आ धमके वो
अपना बनकर

लूटने लगे
मासूम बनकर
एक की भावनाएँ
काटने लगे
प्यार की जड़ों को भी
देख न पाए
अपनी वो हार को
छलिया बन
उजाड़ा था चमन
दोनों थे साथी
सुख और दु:ख में
हुआ फिर क्या
जो सुन न पाए वो
दर्द-लिपटी
साथी की भी पुकार
रोक न पाया
उजड़ते पौधे को
जीत ही गया
देखो नकाबपोश
गूँजने लगा
अट्टहास वादी में
अकेला हुआ प्यार। ❑

9. ये दुखी सलवटें

हवा पे पड़ी
ये दुखी सलवटें
न जाने किस
सोच में डूबी जाएँ
कड़क धूप
नरमाई से पूछे
उसकी इस
उदासी का सबब
चहचहाते
पेड़ों पर झूलते
रंग-बिरंगे
पंछियों के समूह
करें प्रयास
सोच की गलियों से
लौटा लाने का
पानी संग खेलती,
लहरें करें
सवाल पे सवाल
तितली लाई
रंगीन छतरियाँ
फूलों ने खोली
इत्र भरी शीशियाँ

भौंरे सुनाते
नयी पुरानी धुन
पत्तों ने खोली
अपनी हथेलियाँ
हाल पूछतीं
पेड़ों की परछाई

पर जवाब
कुछ न मिल पाए
क्या करे कोई
समझ में न आए
ऐसी गहरी
कौन सी चोट खाई
होठों पे चुप्पी छाई। ❑

10. मधुरिम मिलन

शाम के वक़्त
सूरज के कदम
हौले-हौले से
जब लौटने लगें,
अपनी किसी
धुन में डूबे हुए
साये से बने
पंछियों के कारवाँ
नीड़ों के रुख
जब करने लगें,
शोख लहरें
अँधेरे की ओट ले
बिना आहट
सागर की बाहों में
मचलकर
जब समाने लगें,

चंचल भौंरे
फूलों में छिपकर
बन्द होने का
बहुत बेसब्री से
यूँ इंतज़ार
जब करने लगें,
डगर पर
आहट के कदम
कुछ कम से
जब पड़ने लगें,
हाथों में लिये
चमकते सितारे
जुगनू जब
करीब आने लगें,
जलती लौ से
वो पिघलती हुई

मोमबत्तियाँ
जाने-पहचाने से
गीले-गीले से
अक्स बनाने लगें,
दरवाज़ों के
समान दिशाओं में
दोनों ही पट
जब समाने लगें,
दूर कहीं पे
बतियाते फिरते
झींगुरों की भी
मधुरिम बतियाँ
जब सबको
सुनाई देने लगें,
उस समय
तुम मिलने आना।
पेड़ों के साये
लहराते हुए यूँ
ले लेंगे हमें
आगोश में अपनी
कोई न हमें
पहचान पाएगा।
बरसों बाद
वो अधूरा मिलन
प्यार से भरी
कहानियाँ मन की
लिखकर जाएगा। ❑

11. दीप जलाऊँ

दीप जलाऊँ
दीपावली मनाऊँ
भावों-से भरा
एक नन्हा-सा दीया
लेकर चलूँ
और मिलके आऊँ
बेबस माँ से
जिसका साथी बस
एकाकीपन
दे आऊँ समेटके
कुछ खुशियाँ
तब घर जाकर
दीप जलाऊँ।
मिठाई, पकवान
चमचमाते
मैं लेकर खिलौने
नन्हे मासूम
बेघर, मजबूर

प्यारे बच्चों की
बिखरी वो मुस्कान
लौटा के लाऊँ
तब मन से फिर
दीप जलाऊँ।
उजड़े-से बंजर
खलिहानों में
बरसे पानी, ऐसी
जी भरकर
मैं गुहार लगा लूँ
तब दीपक
खुशियों के जलाऊँ
दीपावली मनाऊँ। ❑

12. बेरंग जीवन

नहीं चाहिए
ज़िंदगी से कुछ भी
बहुत जिया
ये बेरंग जीवन
करना चाहूँ
मौत का आलिगंन
न जाने क्यूँ वो
दूर भागती जाए
अर्थहीन–सी
नीरस–सी ज़िंदगी
देखो अब तो
मौत को भी न भाए
मेरे सामने
बेखौफ़ डटकर
कौन हैं, जो यूँ
राह रोकने आए
चलो इनसे
जीवन मूल्यों पर
कुछ थोड़ी–सी
बात कर ली जाए,
सवाल मेरा-
थरथराती लौ से,
'देती रोशनी
खुद को मिटाकर
मिलता है क्या?'
ज़रा थरथराई-
सवाल मेरा
चीथड़ों में लिपटी
भूख प्यास से
तड़पती–सी माँ से,
पाँच सुपुत्र
दुनिया में थी लाई

क्यूँ बनी फिर
तुम्हारी ये दुर्दशा?
मोम–चेहरा
गहरी चुप्पी छाई–
सवाल मेरा–
मसली कलियों से,
छीनी गई क्यूँ?
मासूम अधरों से
प्यारी मुस्कान
थोड़ा कँपकँपाई
सवाल मेरा–
चटखे होंठ लिये
फैली नदी से
भर–भर देती हो
मिला तुम्हें क्या?
खुद को छिपाती–सी
आँखें झुकाती
ज़रा–सा सकुचाई–
क्यूँ न समझे
मेरे दिल का हाल
कि ये भी चाहे
सच्चा, पवित्र प्यार
करे क्यूँ सदा
संघर्ष और त्याग
जीवन अभिशाप। ❑

13. दर्द-भरी कहानी

मासूम परी
जो जीना चाहती थी,
बनी शिकार
वहशी दरिन्दों का
जूझती रही
ज़िंदगी व मौत से
लड़ती रही,
आखिर तक
ख़ामोश थी ज़ुबान
कह रही थीं
मासूम वो पलकें
अनकही सी
दर्द-भरी कहानी
छोड़ रहा था
शरीर अब साथ
बुलंद रहा
हौसला जीवन का
बुझ ही गई
जीवन की वो जोत
गूँजने लगीं

माँ की भी सिसकियाँ
कुचले देख
नन्ही परी के पंख।
सूना हो गया
पिता का वो आँगन
चहकती थी
सोनचिरैया जहाँ।
आँसू–से भरी
अँखियाँ निहारती
सूनी कलाई
कानों में गूँजती हैं
बेबस चीखें
दर्द और पुकार।
चारों तरफ फैला
सहमा हुआ
आँसुओं का सैलाब
कैसी जुदाई,
अपनी जमीं फिर
खून से है नहाई। ❑

14. खुशियों पर सेंध!

कोई तो है ये
लगाकर जो बैठा
गहरी सेंध!
मेरी खुशियों पर।
झरने लगीं
यूँ भरभराकर
मेरे घर की
मज़बूत दीवारें।
कोई तो है जो–
फेंककर है गया
लाल चोंटली
खुशबू बिखेरते
गुलाबों बीच,
जो मुरझाने लगे
कोई तो है जो–
चुपके से आकर
रोप के गया
मिर्चियों की ये पौध
भरने लगी
घनी कड़ुवाहट
शहद–भरे
मीठे-मीठे बोलों में।
कौन हो तुम?
ज़रा सामने आओ!
बिगाड़ा है क्या?
खुलकर बताओ।

बजी है ताली
एक हाथ से कभी?
तो मुझे ही क्यूँ
'स्वार्थी, लोभी, चालाक'
ये उपाधियाँ?
दे डाली हैं पल में
खुद ही सोचो!
फेंका जाल किसने?
कलियाँ कभी
उड़कर क्या जातीं
भौंरों के पास?
या कि नदियाँ जातीं
प्यासों के पास?
या कि फल आ जाते
भूखों के पास?
तो बन्द करो
अपनी ये घिनौनी
नापाक हरकतें।
जानते हो ना
और मानते भी हो!
खाली रहता
उनका भी दामन,
लूट ले जाएँ
जो औरों की खुशियाँ
मुस्काती ज़िंदगियाँ। ❑

15. छिड़क दो ना

दु:खी ये मन
सीला आँसुओं-संग
प्यार की तुम
धूप, छिड़क दो ना!
मासूम रात
अँधेरे ने जकड़ी,
रोशनी तुम
थोड़ी, छिड़क दो ना!
मन के बंद
इन दरवाज़ों पे
तुम यादों की
बूँदें, छिड़क दो ना!
मुरझा गई
मन की चम्पा-चमेली
खुशबू–भरी
स्मित छिड़क दो ना
साँसों की डोर
ढूँढ़ने लगी, तुम
चारों ही ओर
रोशनी, जीवन की
ज़रा, छिड़क दो ना। ❑

16. सुहाने दिन

याद आ रहे
पापा बहुत आप।
आपका प्यार
अपना परिवार।
सुहाने दिन
बिताए संग मिल।
चिन्ता न फिक्र।
आपकी स्नेही छाया।
माँ से भी ख़ूब
था ममता को पाया
हाथ पकड़
स्कूल संग ले जाना
बस्ता उठाना।
थक जाने पर यूँ
माँ का पैर दबाना।
बड़े ज्यूँ हुए
भर गई मन में
पीर ही पीर
कहना चाहूँ
पर कह ना पाऊँ
भीगा है मन
फिर ढूँढ़ने चली
घर का कोना
छिपा दूँ जिसमें
आँसू की धारा
हर तरफ़ मिली
सीली दीवारें,
सहमे-से सपने।
डर के मारे
पुकारती हूँ पापा-
जल्दी से आओ
अनकही-सी व्यथा
सुनते जाओ
यूँ दोबारा हिम्मत
जुटा न पाऊँ
दम-सा तोड़ गई
गले में मेरे
दर्द-भरी आवाज़
अधूरी रही आस। ❑

3. डॉ. हरदीप कौर सन्धु

1. मन-आँगन

दूर बैठे ही
देखा मन-आँगन
ज्यों दी आवाज़
तुम बैठे थे पास
बहते आँसू
बुझाने लगे प्यास।
सहेज रखे
मिले जो पल-पल
फूल हो जैसे
फुलकारी बिखरे
मीठी खुशबू
दिल आँगन भरे।
दिल का द्वार
कभी बन्द न होगा
दस्तक चुप्पी
झट से तोड़ देगी
तेरी खुशबू
हवा में ढूँढ़ लेगी।
दीप अनश्वर
रौशनी चली आए
आँधी-तूफान
टकरा लौट जाए
दूरियाँ नहीं
ये ज़मीनी फासले
रूह मन से मिले । ❑

2. विदा की घड़ी

लाडो बिटिया
होने लगी ज्यों विदा
'न आँसू बहा
तुझे जाना ही होगा
न वश मेरे
तेरा वश भी आज
नहीं चलेगा
तुम हो मन-मोती

किसी और का
छुपाकर हमने
दिल में रखा
आज गुड़िया तेरी
बैठी उदास
चुप नीर बहाए
यूँ तेरे बिन
कौन उसे खिलाए
कैसी ये घड़ी
रौनक तू ले चली

त्रिंजण सूना
सखियाँ भी चुप हैं
माँ-हृदय भी
अब डोलने लगा
बाबुल कैसे
झेले तेरी जुदाई
क्यों भर आईं
सबकी ये अँखियाँ
धन पराया
क्यों होती है बिटिया
क्यों दस्तूर बनाया? ❑

3. मेरा वजूद

हूँ भला कौन
क्या वजूद है मेरा
यही सवाल
आ डाले मुझे घेरा
टूटे सपने
जब मुझे डराएँ
मेरा वजूद
कहीं गुम हो जाए
दूर गगन
चमकी ज्यों किरण
अँधियारे में
सुबह का उजाला

घुलने लगा
जख़्मी हुए सपने
आ चुपके से
किए ज्यों आलिंगन
सुकून मिला
मेरा वजूद मिला
मैं तो चाँद हूँ
गम के बादलों में
था गुम हुआ
मिला सूर्य-संदेश
मैं धन्य हुआ
करूँ तुमसे वादा

तुम जैसा ही
एक काम करूँगा
तुम करते
दिन में ही उजाला
मैं उजियारी
हर रात करूँगा
हर बात करूँगा। ❑

4. असंख्य दीप जले

आई दीवाली
जगमग रौशन
घर आँगन
जब मिट्टी का दीया
स्नेह–बाती से
परोपकार–तेल
डाल जलाया
जीवन का आदर्श
दीए को माना
अंधकार हमने
कभी न माँगा
असंख्य दीप जले
दिव्य ज्योति से
अज्ञान का तमस
भीतर छाया
तिरोहित हो जाए
तेज–पुंज से
वो कर्म का कचरा
बुहारो तुम
चेतना के आँगन
जमा जो हुआ
एक अखंड ज्योति
प्रेम–दीप की
आँधियों में भी जले
दिव्य प्रकाश मिले! ❑

5. गुम हुई नदिया

रेगिस्तान में
गुम हुई नदिया
सूख जाती है
चीखती-पुकारती
चाहती मुक्ति
मंज़िल न ठिकाना
न कोई रास्ता
मिले नहीं सागर
गुम जब हो

सागर में नदिया
मिटा अस्तित्व
गुम होते किनारे
मिटे नाम भी
छोटी–सी ये नदिया
बड़ी हो जाए
सीमित–से अब ये
हो सीमाहीन
ऐसे गुम हो जाना
सब कुछ पाना है। ❑

6. अकेला राही

ओ मेरे मन
तुझे लगता है तू
अकेला राही
इस जग त्रिंजण
मगर ऐसा
होता नहीं पगले
कोई न कोई
बैठा मन त्रिंजण
बिन बोले ही

पढ़ता है तुझको
दिल तरंगें
ज्यों उसके भावों की
आ मिलती हैं
तेरे हृदय उठीं
शोर मचाती
ख़ामोशी की लहरें
खुद-ब-खुद
चेहरे पे बिखरे
सुकून की चाँदनी! ❑

7. रब करे गलतियाँ

रौब हमारा
किसी पे न चलता
रौब तो बस
यूँ रब पर चलता
रब्बा देख ले
अगर हुई कुछ
ऊँच-नीच तो
फिर देखना तुम
जब कभी भी
कुछ ग़लत होता
या फिर कभी
जान से प्यारा कोई
बिछुड़ जाता
रब पे बहुत गुस्सा
तो हमें आता
रब पर लगाके
सारे यूँ दोष
मुक्त हम हो जाते
क्यों जो हमेशा
सही ही हम करें
क्यों फिर भरें
ग़लतियाँ तो सारी
वो रब ही करता! ❑

8. तेरी ख़्वाहिश

हम दोनों तो
नदी के किनारे दो
जीवन भर
एक-संग तो चले
मिल न सके
थी फिर भी मगर
उम्मीद एक-
गिरे जो समन्दर
कभी ये नदी
मिट दोनों किनारे
एक हो चलें
हम दोनों में कुछ
एक-सा लगे
मेरे दु:ख जैसा ही
कभी तू लगे
रौशनी-सी बिखरे
हँसती जो मैं
ये तू क्या जाने भला

रगों में मेरी
मेरा ख़ून जो बहे
ख़्वाहिश तेरी
ये दोनों किनारे तो
शायद मिलें
कभी ख़्वाबों तक में!
प्यार की दोस्ती
यहाँ रहेगी सदा
हम मिलें न मिलें! ❑

9. चुप की नदी

चुप की नदी
बहती एकांत में
डूबा था मन
उखड़ा बेचैन-सा
यूँ हर पल
पुरज़ोर लहरें
धकेलें इसे
न जाने यह कैसे
धीरे–धीरे से
भीतर ही भीतर
इन्हें समाता
गूँगी चुप्पी की ज़ुबाँ
बोलते हर्फ़
मन की दहलीज़ पे
हौले–हौले से
सँजोकर रखता
चुप–नदी से
पीता दो घूँट पानी
रूह की प्यास
सहेजे ही सहेजे
मिटाता जाता
समेट कर लाईं
चुप लहरें
खिलखिलाती हुई
हँसी कहीं से
कानों में है घोलता
इच्छाओं के
भरे-भरे भंडार
इसी नदी में
बहाता चला जाता
नई ज़िन्दगी
नई नवेली धुनें
इसी चुप्पी से
छेड़कर ये मन
राग इलाही गाता! ❑

10. ज़िन्दगी से जुदाई

तू लाख चाहे
तुझसे कभी जुदा
मैं हो जाऊँ यूँ
ये मुमकिन नहीं
मैं हुई जुदा
तुम भी शून्य होगे
झेलोगे कैसे?
शून्य को जाने बिना
तू भी है शून्य
दस बन न पाओ
दिल का यह
टिमटिमाता दीया
गर बुझा तो
तुम्हारे अँधेरों को
कहाँ से फिर
मिलेगी ये रौशनी
कठिन रास्ते
अनजाना सफ़र
अकेले तुम
चल नहीं पाओगे
विलाप जैसी
छूटी बेजान हँसी
तेरी रूह के
जब पोर-पोर से
झेलोगे कैसे
दुखदायी मौसम?
जिओगे कैसे
बेरंग हुए पल
बिन रंगों के
होंगी रंगीन नहीं
दर्दीली यादें
जर्जर हुआ जिस्म।
जोड़ न पाए
लौटाने को कर्ज़
लिया मुझसे
तेरी साँसों ने सदा
चाहकर भी
चुका नहीं पाओगे
तू है वजूद
मैं तेरी परछाईं
बता दो आज-
परछाईं से तुम
क्या जुदा हो पाओगे? ❑

4. रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

1. नाम नहीं दो

हैं रिश्ते छोटे
इस जग के सारे
प्यार है ऊँचा
इसे नाम नहीं दो।
नाम बोझ है
जीवन भर ढोना,
हँसी लुटाके
पग-पग पे रोना,
जीवन-गति
इसे विराम न दो
भोर उजाला
सदा लेकर आए,
नेह-बगिया
हर रोज़ खिलाए,
आतुर नैन
पथ तेरा निहारें
इन्हें शाम नहीं दो। ❑

2. तुम न रोना

बदा यही था
ये साथ यहीं तक
तुम न रोना
पिघलेगा ये मन
हम अभागे
जनम-जनम के
मिलते कैसे?
था शापित जीवन
यह दोराहा
बहुत ही निर्दय
दर्द न जाने
पढ़े न धड़कन
भीगा है सीना
तर हुआ आँचल
फूटी रुलाई
डूबे धरा-गगन

आ पहुँचे हैं
हमे देने दिलासा
धरे मुखौटा
कपटी परिजन

चाहें फिर भी
नहीं भूल सकेंगे
मिला दो पल
सस्मित अधरों का
ये कम्पित चुम्बन। ❑

3. आँसू की गठरिया

अमृत बाँट
आँसू की गठरिया
सिर पे ढोई
उनको नागफनी
उगाते देख
तुम बहुत रोई
वाणी के शर
पल-पल तुमको
रहे बींधते
घायल हुई तुम
भीष्म से ज़्यादा
कभी दो पल सोई?
भारी बेधक
दु:ख सदा तुम्हारा
रहा रुलाता
अभिशापों की नई
कथा सुनाता
तुम जब थीं जागी

गर्म छड़ों से
तभी गई थीं दाग़ी
आँसू - पोटली
आँगन में बिखरी
पाहन बनी
तनिक न बिफरी
कोई न आया,
तब तुम्हें बचाने
ढाढ़स देने
न यम, न देवता
आहत किया
जब देकर ताने
पीर समेटी
गर्म आँसू थे छाने
झोली भरके
ओ तुमने कोकिला!
तुम्हें जग का
था दु:ख-दर्द मिला

प्यार क्या होता
कब तुमने जाना
सिर्फ़ पढ़ा था –
कभी कथा–गीत में
लिखी भाग में
सदा कँटीली शय्या
शर का सिरहाना। ❑

4. कर दो तर्पण

दोष न देंगे
हम आज किसी को
लेकर नाम
तर्पण कर दो ये
रिश्ते तमाम
स्वाहा हो गया सब
बची भस्म है
समझ सके कब
दूर है जाना
छोड़ यह ठिकाना
श्रद्धा–सुमन
भी अर्पण कर दो।
बिखरा सब
नहीं गया समेटा
जर्जर मन
है कफ़न – लपेटा
राख हो गईं
तिल–तिल जलके
अभिलाषाएँ
मधुर कल्पनाएँ
समर्पण कर दो। ❑

5. तुमको पाया

खाक थी छानी
वीरानों की हमने
कभी भटके
मोड़ पर अटके
कोई न भाया,
भरी भीड़ में तब
तुमको पाया।
तुम कहाँ छुपे थे?
यूँ बरसों से,
खुशबू बनकर,

दूध-चाँदनी,
कभी भोर का तारा,
नभ-गंगा से
कभी रूप दिखाया।
किया इशारा
तुम ही थे अपने
अन्तर्मन से
सुख-दु:ख के साथी
प्राणों की ऊष्मा
बन करके आए
भर गले लगाया। ❑

6. मेरा भी कोई

जब मैं रुका
सोचकर अकेला
कि कौन मेरा?
तभी आवाज़ आई
'इस जग में
है मेरा भी तो कोई
जो बिना बोले
मन की किताब का
हर आखर
साफ़ बाँच लेता है
किसी कोने में
दुबक जाए दु:ख
जाँच लेता है।
उसका नेह-स्पर्श
टूटती साँस
हृदय की प्यास को
देता जीवन
यह अपनापन
बनता धड़कन।' ❑

7. तुम पावन

जनम मिले
तुम ही हो बहना
इस जग में
हो चाहे प्रलय भी
साथ न छूटे
हम दोनों का कभी
हाथ न छूटे
मैं रहूँ ऋणी सदा
तेरे प्यार का
बँधा ही रहूँ सदा

स्नेह-डोर से
हृदय के छोर से
तुम पावन
मेरी मनभावन,
मेरा गहना
सुख-दुख में मेरे
गले लगे रहना। ❑

8. मेरे सूरज

मेरे सूरज
बादल तो आएँगे
घुमड़कर
अम्बर में छाएँगे
रोकें उजाला
तुम्हें सहना होगा
लहर बन
चट्टानों से टकरा
बहना होगा
पीछे नहीं मुड़ना
दूर है जाना
अँधेरे भँवर से
न घबराना
सागर तक जाना
आँसू पोंछके
डुबकी है लगाना
मोती बटोर लाना। ❑

9. हमने लिखा

हमने लिखा-
चिड़िया उड़ो तुम
तोड़ पिंजरा
नाप लो ये गगन
छू लो क्षितिज,
पार न कर सके
लेकिन हम
अपना ही आँगन।
लाखों बातें कीं
तोड़कर पहाड़
नदी लाने की
तोड़ न सके कभी
जर्जर ताला
सदियों से था जड़ा
रूढ़ियों पर
हमारे सोच पर

डरता मन,
टूट न जाए कहीं
ये घुन-खाया
दरवाज़ा पल में
जो छुपाए है
कमज़ोर हाथों को,

उन हाथों को
जो कभी नहीं बढ़े
मुक्ति पाने को
पिंजरों में बन्द ही
लिखते रहे
सदा मुक्ति का गीत
होकर भयभीत। ❑

10. प्रेम का थार

प्रेम का थार
आक्षितिज फैला था
चलते रहे
उम्रभर बेरोक
पहुँचे जहाँ?
बबूल-वन पार
सूरज ढला
वो था प्रस्थान बिन्दु
मंज़िल नहीं,
छायाएँ भी लापता

कुछ न मिला
साँझ हुई तन की
चलते कैसे
बैसाखी के सहारे
देखा इतना-
हर टीले पे बसी
प्यास की बस्ती
युग-युगान्तर से ,
कण्ठ था सूखा
चूर-चूर संकल्प
खाली हाथ लौटे हैं। ❑

11. पीर-तरी

पीर-तरी ले
उतरे सागर में
तुमसे कैसे
अपने दु:ख बाँटूँ!
घोर अँधेरा
पथ है अनजाना
बोलो कैसे मैं
दर्दीले पल काटूँ।
जितने मिले
हमें प्राण से प्यारे
न चाहकर
वे हर बाज़ी हारे
गहन गुफा
पग-पग है खाई
कैसे इनकी
गहराई मैं पाटूँ!
जो दिखते हैं
महामानव ज्ञानी
उनकी लाखों
हैं कपट कहानी
रोती दीवारें
सन्तापों की हिचकी
लाक्षागृह में
घिरे जीवन भर
बूँद-बूँद को
तरस गए तुम
सुने न कोई
सागर-जैसी गाथा
दूँ प्यार किसे?
सब पर पहरा
हर द्वारे पे
है सन्नाटा गहरा
कोई न बूझे
जले मन की ज्वाला
राह न सूझे
किस-किस पथ के
मैं सब काँटे छाँटूँ । ❑

12. नन्हे कदम

नन्हे कदम
चलकर तुम्हारे
द्वार पे आए
आषाढ़ की बौछार
मेघ हैं लाए ।
मुकुल-से मुँदे थे
दोनों नयन
पाँखुरी-से अधर
मधु-सिंचित
कभी मुसकुराते
फरफराते
याद करते कोई
बीती कहानी
तुम जो आए गोद
साथ में आई
सातों नियामत भी
चाँद पूनो का
खिला हर कोने में
बेला महकी
सुरीली रुलाई में
मधु चाँदनी फैली। ❑

13. मिल साथ चलेंगे

काँटों का वन -
मिल साथ चलेंगे
बन जाएगा
वो नन्दन कानन।
शीत-ताप में
न दो पल रुकना
अंधड़ आए
नहीं सीखा झुकना
होंगी राहें भी
दुर्गम पथरीली
शूल चुभेंगे
होंगी आँखें भी गीली
सूरज-संग
हम साथ ढलेंगे
घोर निशा में
चन्दा से निकलेंगे
ओस नहाई
होगी सुबह जब
फूलों से मचलेंगे। ❑

14. पावनता

रस निचोड़
जग-पावनता का
बहन बनी
सुमनों का सौरभ
हीरे की कनी
आरती-सी मधुर
दीप की ज्योति
भाव हैं छलकते
नेह-सम्बल.
टीका जब लगाए
सूर्य शर्माए
फुहार की तरह
बरस पड़ीं
थीं शुभकामनाएँ
एक बार क्या
सौ बार ये जीवन
बहना-हित
खुशी-खुशी लुटाएँ
फूल बिछाएँ
यह पावन दिन
हर पल मनाएँ । ❑

15. सपना टूट गया

नींद से जगे
सपना टूट गया
कल जो मिला
पल में रूठ गया
अपना कहें
हम किसको भला
साथ जो चला
उसने ही था छला
दे गए दर्द
जब माँगा था कुछ
और बोले थे-
'लो निशानी हमारी
सँभालो इसे!'
आज तक सँभाले
सँजोते फिरे
सहे जाते हैं दर्द
जो तुमने थे दिये। ❑

16. बिखर जाऊँगा

खुशबू बन
मैं बिखर जाऊँगा
कभी न कभी
तुझे पा ही जाऊँगा।
मुझे सालती
बेरुख़ी ये तुम्हारी
कि चिट्ठी नहीं
बोल तालों में बन्द
खुद को आज
किया नज़रबन्द।
हवा का झोंका
बन आ ही जाऊँगा।
कह दो सभी
शिकवे शिकायत
कुछ भी बोलो
कर दो इनायत
मार डालेंगी
तुम्हें और हमें ये
चुभती हुई
ख़ामोशियाँ तुम्हारी
मिटूँगा यदि
गीत बन जाऊँगा
सिर्फ़ तुम्हें गाऊँगा। ❑

17. वहाँ मुझे पाओगे

पुकारोगे जो
मैं ठहर जाऊँगा
तुम्हें छोड़ मैं
भला कहाँ जाऊँगा!
तुम्हारे लिए
पलक-पाँवड़े मैं
बिछाता रहा
गुनगुनाता रहा
आज भी वहीं
मैं नज़र आऊँगा
दूर हो तुम
दिल हारना नहीं
दूरियाँ नहीं
दूर करेंगी हमें
सिन्धु या गिरि
राह रोकते नहीं
चलते रहो
कभी टोकते नहीं

रोक न सका
पखेरू की उड़ान
कोई शिखर
सागर की लहरें
थपेड़े बनीं
ज़िन्दगी में इनसे
हमारी ठनी
इन सबको चीर
पार जाऊँगा।
ये न समझो कभी
हार जाऊँगा
किसी भी मोड़ पर
एक दिन मैं
तुम्हें पा ही जाऊँगा।
कहता मन
मेरे द्वार पे जब
आओगे तुम
दस्तक नहीं कभी
देनी पड़ेगी
कदमों की आहट
दे देगी पता
रात हो या प्रात हो
मेरे द्वार को
सदा खुला पाओगे
गले लग जाओगे। ❑

5. कमला निखुर्पा

1. मिलना तेरा-मेरा

धरती मिली
गगन से जब भी
पुलक उठी
क्षितिज हरषाया -
बदली मिली
पहाड़ों के गले से
बरस गई
सावन लहराया-
ओ मेरे मीत!
मिलना तेरा-मेरा
मिले हैं जैसे
नदिया का किनारा -
मन क्यों घबराया? ❑

2. मैं पाषाण

मोम-सा प्यार
जल उठा पल में
पिघल गया
धुआँते रहे तुम
बह गयीं वो
प्रेम की निशानियाँ
तुम कोमल
आहत हो पल में
मैं तो पाषाण
जमी युगों-युगों से
न बदली थी
न बदलूँगी कभी
वर्षों पहले
उकेरे थे तुमने
अंकित हैं वे
प्रेम निशाँ मन में-
साँसों मे जीवन में ❑

3. परीक्षा–भवन में

नन्हा–सा हाथ
थामे छोटी कलम
मचल उठा
परीक्षा भवन में
आँखें चमकीं
सवालों को पढ़के
होंठों पे हँसी
सरपट जो दौड़ी
नन्ही कलम
कागज़ी मैदान पे
बनते गए
कदमों के निशान
खिला मैदान
खिले शब्दों के फूल
गूँथे कलम
भोले भावों की माला
महका मन–
'पहनूँ इतराऊँ
खुशबू बिखराऊँ।' ❑

4. सोनपरी

हाथों में लिये
जादू की नन्ही छड़ी
सितारों–जड़ी
लो आई सोनपरी
छूना ना कोई
उजरी निखरी है।
हो ना वो मैली–
है निर्मल कोमल
ये सोनपरी
सपने अपने–से
मुट्ठी में भरे,
अधखुली अँखियाँ,
मुसकाई है
जाने क्यों निंदिया में
दुलारी ये सोनपरी। ❑

5. जीवन-तरु

जीवन-तरु
तुम फूल–से खिले
कब से बैठी
नेह की छाँह–तले

पुष्प-सुगंध
पा मधु मकरंद
तृप्त हुई मैं
आया नव बसंत
खिल उठी मैं संग। ❑

6. मन की कथा

मन की कथा
युग-युग-संचित
मन की व्यथा
कितना ही छुपाऊँ
बाँचती जाऊँ।
अंतर्घट कम्पन
रोक ना पाऊँ।
यह कैसा उत्कर्ष?

फैला अमर्ष।
हर बेटी सहमी
माँ डरी-डरी।
आँखें आँसुओं-भरी
डूबती तरी
क्यों बेबस है नारी?
शक्ति-स्वरूपा
फिर भी क्यों बेचारी?
अपनों से क्यों हारी? ❑

रचना श्रीवास्तव

1. देखा है मैंने

माँ देखा मैंने–
बहुत कुछ देखा
बेनूर लोग
बेरंग ये दुनिया
देखा है मैंने
खुद आगे जाने को
कुचला उसे
स्वार्थी हुआ इन्सान
देखा है मैंने
धर्म की आँधी में
जलता घर
चूड़ी तोड़ते तुम्हें
देखा है मैंने
आते ही बुरा वक़्त
मुँह फेरते
अपनों को भी यहाँ
देखा है मैंने
तेजाब से जलता,
वो चेहरा भी
क्या थी ख़ता उसकी?
देखा है मैंने
कर्ज़ में डूबा शव
रोता वो घर
बंजर हुआ खेत
देखा ये सब
अब न देखा जाए
सुन विनती
तू इतनी-सी मेरी
गर्भ में सदा
रहने दे मुझको
बाहर नहीं
आना चाहता हूँ मैं
हिस्सा बनना
इस बुरे जग का
नहीं चाहता
नहीं चाहता हूँ मैं
इन जैसा बनना। ❑

2. उम्र जो बढ़ी

उम्र जो बढ़ी
बढ़ा जोश उनका
कुछ पद था
कुछ पैसे का बल
माता-पिता की
थी अपनी दुनिया
लड़खड़ाती
हाथों में ले के प्याले
गाड़ी पैसा दे
छोड़ दिया जीने को
मनमानी को
उम्र कच्ची उनकी
बहके पग
थरथराई साँसें
खोया होश भी
नव जीव आने का
संकेत मिला
होश में आए जब
सब था लुटा
लोक-लाज का डर
भविष्य-चिन्ता
बोला, पैसा-रुतबा
आज फिर से
कूड़े के ढेर पर
गिद्ध मँडराते हैं । ❑

3. तेरी कोख में

तेरी कोख में
आने से पहले ही
सोचा, क्या बनूँ?
बेटी बन के चलूँ
साथ निभाऊँ
या रोड़े अटकाऊँ
बन के बेटा
बनूँ तेरी ही जैसी
स्नेह की मूर्ति
लिया निर्णय मैंने
सुनके यह
जालिम है दुनिया
कहा सभी ने,
नोच लेंगे ये तेरी
नन्ही-सी साँसें
दम तोड़ेंगी सभी

अभिलाषाएँ
अपनों के ही हाथों
लुटेंगी सदा
तुझ पे था यकीन;
मुस्कुराई मैं
बन बिटिया तेरी
कोख में आई
मेरे आने के चिह्न
दिखे तुझमें
ख़ुशी से नाची तुम
पिता भी ख़ुश
जब डॉक्टर बोला
है कन्या–भ्रूण
चेहरे पे शाम थी
घर में दु:ख
मैं थी अभिशापित;
अन्दर आया
ज़हरीला–सा धुआँ
चुभने लगा
बहुत कष्ट हुआ
'अम्मा!' मैं रोई
तुझे पुकारा मैंने
दुहाई भी दी
पर धुआँ न रुका
नन्हे–से हाथ
अकड़ने लगे हैं
पकड़ ढीली
आवाज़ में शिकन
होने लगी है
क्या वो लोग सच्चे थे?
मैं थी गलत?
क्या ये पाप था, मेरा
लड़की होना?
तू भी तो औरत है
फिर ऐसा क्यों?
जिस लोक से आई
उसी को चली
अच्छा हुआ, न जन्मी
इस भूमि पे
क्या पता, बनकर,
औरत मैं भी
हत्या बेटी की करती
ओ माँ, शुक्रिया!
तूने मुझे बचाया
इस महा पाप से। ❑

4. द्वार पे सजे

आशा का वृक्ष
मन में खिले सदा
अँधेरा भागे
उजाले की झालर
द्वार पे सजे
सोचों में राम रहे
घर में खुशी
अपनों का साथ हो
दूर काली रात हो। ❑

5. आखिरी पत्ता

आखिरी पत्ता
झड़ने से पहले
काँप रहा था
सोचा नहीं था कभी
जब फूटा था
कोंपल बन कर
इस पेड़ पे
कि बिछुड़ना होगा
इस डाली से,
जिसपे जन्म लिया;
धूप को पिया
बरखा में नहाया
भोजन बना
पेड़ की गलियों में
पहुँचाया भी
आया शरण जो भी
दी उसे छाया,
हवा की गर्द झाड़ी
सजाया उसे;
पीली हुई काया तो
अपने भूले,
साथी भी छोड़ गए
ठूँठ हुआ वो
तो पंछी उड़ गए;
पर वो पत्ता
अपना दर्द लिये
आँखों को मूँदे
डाली से जुदा हुआ
एक उम्मीद
मन में लिये हुए
कि लौटेंगे वो
बहारें भी आएँगी
वापस न जाने को। ❑

6. जीवन-ओस

जीवन—ओस
पीना ही पड़ता है
जीना पड़ता
मन चाहे न चाहे
जीवन-सूर्य
जलाता हरदम
झुलसे तन
पर प्यारा सबको
जीवन-राग
सुर या बेसुर में
गाएँ सब ही
सुख में या दु:ख में

जीवन-ऋतु
दिन बसन्ती कम
पत्ते झरे हैं
प्रत्येक मौसम में
जीवन-रेत
मुट्ठी से फिसलता
भींची ज़ोर से
सिरा, न आया हाथ
अचम्भित मैं
समझ न पाई हूँ
इसके खेल
जीवन है शीतल
या लहू की चुभन। ❑

7. विदेशी धरा

विदेशी धरा
अपरचित हवा
चुभे शूल-सी
फिर भी यहाँ आए
लौटना चाहें
कभी लौट न पाएँ
ऐसा ये सुख
जकड़े हड्डियाँ भी

यहाँ का सुख
पाँच सितारा जेल
मन बंधक
भ्रमित हुआ मन
भटके सदा
संस्कृतियों के बीच
आँखें घायल
कुछ न आया हाथ

भटकी राह
डॉलर की चमक
लूटती मन
घर न लौट सकीं
देश ने भी पुकारा। ❑

7. डॉ. जेन्नी शबनम

1. नया घोंसला

प्यारी चिड़िया
टुक-टुक देखती
टूटा घोंसला
फूटे जो सारे अंडे
उजड़ा सब
मरे अजन्मे चूज़े,
चीं-चीं करके
फिर चिड़िया रोती
सहमी हुई
हताश निहारती
अपनी पीड़ा
वो किससे बाँटती
धीर धरती।
जोड़-जोड़ तिनका
बसेरा बसा
कितने वर्ष और
मौसम बीते
अब सब बिखरा
कुछ न बचा
जिसे कहें आशियाँ,
बचे न निशाँ
पुराना झरोखा व
मकान टूटा
अब घोंसला कहाँ?
चिड़िया सोचे-
चिड़ा जब आएगा
वो भी रोएगा
अपनी चिड़िया का
दर्द सुनेगा,
मनुष्य की क्रूरता
चुप सहेगा
संवेदना का पाठ
वो सिखाएगा!
चिड़ा आया दौड़के
चीं-चीं सुनके
फिर सिसकी ले के
आँसू पोंछके
चिड़ी बोली चिड़े से-
चलो बसाएँ
आओ तिनके लाएँ

नया घोंसला
हम फिर सजाएँ

ठिकाना खोजें
शहर से दूर हो
जंगल करीब हो! ❑

2. यह दुनिया

यह दुनिया
ज्यों अजायबघर
अनोखे दृश्य
अद्‌भुत संकलन
विस्मयकारी
होते हैं हतप्रभ!
अजब रीत
इस दुनिया की है
माटी की मूर्ति
देवियाँ पूजनीय
निरपराध
बेटियाँ हैं जलती
जो है जननी
दुनिया ये रचती!
कहीं क्रंदन,
कहीं गूँजती हँसी
कोई यतीम,
कोई है खुशहाल
कहीं महल,
कहीं धरा–बिछौना

बड़ी निराली
गजब ये दुनिया!
भूख से मृत्यु
वेदना है अपार
भरा भण्डार
सम्पत्ति बेशुमार
पर अभागा
कोई नहीं अपना
सब बेकार!
धरती में दरार
सूखे की मार
बहा ले गया सब
जल–प्लावन
अपनी आग में ही
जला सूरज
अपनी रौशनी से
नहाया चाँद
हवा है बहकती
आँखें मूँदती
दुनिया चमत्कार

रूप-संसार!
हम इंसानों की है
कारगुज़ारी
हरे-घने जंगल
हुए लाचार
कट गए जो पेड़
हुए उघार
चिड़िया बेआसरा
पानी भी प्यासा
चेत जाओ मानव
वरना नष्ट
हो जाएगी दुनिया
मिट जाएगी
अजब ये दुनिया
गजब ये दुनिया! ❑

3. जीत का भय

विफलताएँ
बार-बार मिलतीं
मुझे डिगातीं
फिर भी मैं बढ़ती,
मेरे ही हिस्से
बार-बार उदासी
आखिर क्यों ये?
हर बार हारती
क्यों जीत नहीं पाती?
क्या डरती हूँ?
शायद डरती हूँ
मान-सम्मान
अपने-पराये के
खोने का डर
सदैव सताता है,
जीत का पथ
सुहाना दिखता है
पर होता नहीं
हारे हुए का क्रोध
पीछा करता
जब तक गिरूँ न,
छल कपट
पीछा नहीं छोड़ता,
हार में भय
मुमकिन ही नहीं
हार में बस
अवसाद घिरता
मन है रोता
कोई अपना हो या
फिर पराया

अप्रभावित होता,
मैं हारती हूँ
क्योंकि मैं डरती हूँ
जीत से नहीं,
अपने जीतने से
मेरी जीत से
अपनों का प्रकोप
प्रबल होता
अपने दूर जाते,
भ्रम ही सही
अपनों के साथ का
इस कारण
हारना ही पड़ता
जीवन जीना होता! ❑

4. भाव और भाषा

भाषा-भाव का
आपसी नाता ऐसे
शरीर-आत्मा
पूरक होते जैसे,
भाषा व भाव
ज्यों धरती-गगन
चाँद-चाँदनी
सूरज की किरणें
फूल-खुशबू
दीया और बाती
तन व आत्मा
एक दूजे के बिना
सब अधूरे,
भाव का ज्ञान
भाव की अभिव्यक्ति
दूरी मिटाता
निकटता बढ़ाता,
भाव के बिना
सम्बन्ध हैं अधूरे
बोझिल रिश्ते
सदा कसक देते
फिर भी जीते
शब्द होते पत्थर
लगती चोट
घुटते ही रहते,
भाषा के भाव
हृदय का स्पंदन
होते हैं प्राण
बिन भाषा भी जीता
मधुर रिश्ता
हों भावप्रवण तो
बिन कहे ही

सब कह सकता
गुन सकता,
भाव-भाषा संग जो
प्रेम पगता
हृदय भी जुड़ता
गरिमा पाता
नज़दीकी बढ़ती
अनकहा भी
मन समझ जाता
रिश्ता अटूट होता! ❑

5. चिड़िया फूल या तितली होती

अक्सर किया
खुद से ही सवाल
जिसके उत्तर
नहीं किसी के पास,
मैं ऐसी क्यों हूँ?
मैं चिड़िया क्यों नहीं?
या कोई फूल
या तितली ही होती?
गर होती तो
रंग-बिरंगे होते
मेरे भी रूप
सबको मैं लुभाती
हवा के संग
डाली-डाली फिरती
ख़ूब खिलती
उड़ती औ नाचती,
मन में द्वेष
खुद पे अहंकार
कड़वी बोली
इन सबसे दूर
सदा रहती
प्रकृति का सानिध्य
मुझे मिलता
बेख़ौफ़ मैं भी जीती
कभी न रोती
बेफ़िक्री से ज़िंदगी
ख़ूब जीती
हँसती ही रहती
कभी न मुरझाती! ❑

6. कुछ सुहाने पल

मुट्ठी में बंद
कुछ सुहाने पल
ज़रा लजाते
शरमा के बताते
पिया की बातें
हसीन मुलाकातें
प्यारे-से दिन
जग-मग सी रातें
सकुचाई-सी
झुकी-झुकी नज़रें
बिन बोले ही
कह गई कहानी
गुदगुदाती
मीठी-मीठी खुशबू
फूलों के लच्छे
जहाँ-तहाँ खिलते
रात चाँदनी
अँगना में पसरी
लिपटकर
चाँद से फिर बोली-
ओ मेरे मीत
झीलों से भी गहरे
जुड़ते गए
ये तेरे-मेरे नाते
भले हों दूर
न होंगे कभी दूर
मुट्ठी ज्यों खोली
बीते पल मुस्काए
न बिसराए
याद हमेशा आए
मन को हुलसाए! ❑

7. रंगरेज हमारा

सुहानी संध्या
डूबने को सूरज
देखो नभ को
नारंगी रंग फैला
मानो सूरज
एक बड़ा संतरा
साँझ की वेला
दीया-बाती जलाओ
गोधूलि वेला
देवता को जगाओ

श्लोक सुनाओ
अपनी संस्कृति को
मत बिसराओ
शाम होते ही
लौटते घर
विचरते परिंदे
गलियाँ सूनी
जगमग रोशनी
वो देखो चन्दा
हौले-हौले मुस्काए
साँझ ढले तो
सूरज सोने जाए

तारे चमके
टिम-टिम झलके
काली स्याही से
गगन रंग देता
बड़ा सयाना
रंगरेज हमारा
सबका प्यारा
अनोखी ये दुनिया
किसने रची?
हर्षित हुआ मन
सारा भुवन
देख सुन्दर रूप
चकित निहारते! ❑

8. डॉ. मिथिलेश दीक्षित

1. वह न बोली

फटे चिथड़े
टाट के टुकड़ों में
देखी थी कभी
वह मलिन खोली,
वह न बोली,
आँसुओं ने बात की,
वे नेत्र बोले,
अधर की चीत्कार
धुँधली दृष्टि
जर्जर देह बोली,
वह न बोली,
काँपते पैरों ने भी
छोड़ा सहारा,
कँपकँपाते हाथ,
हिलता तन,
न पकड़ी जा रही
हाथों से रोटी,
देखकर अन्याय
नारी-अस्मिता
चीत्कार कर बोली,
दु:ख बड़ा या
मैं बड़ी थी सोचके
स्तब्ध-सी थी,
फिर नहीं मालूम
उसके साथ
कैसे चेतना हो ली,
मेरी सर्जना बोली। ❑

2. मृगतृष्णा

बाहर सुखी
मगर भीतर से
दु:खी बहुत,
हम कहाँ जा रहे
नहीं पता है,
साथ-साथ भीड़ के
हम चलते
चलते ही रहते,

हम खुद ही
खुद से अनजाने
जिये जा रहे,
बढ़ी पिपासा
नहीं किनारा कोई
निकट दिखा
सरोवर तक का,
मृगतृष्णा में
चले जा रहे हम,
पीछे पल से
अनजाने रहते
आगे का कुछ
जान न पाते हम
मिट जाने का
केवल भय पाले,
बने त्रिशंकु
अपने में ही डूबे,
जीवन से ही ऊबे! ❑

3. एक चित्र

मेरे मन में
एक चित्र उभरा,
हुआ सवेरा,
सोने की पॉलिश से
हर पत्ते का
छिपता रंग हरा,
ताल-तलैया
सुबह सुनहरे
खिलते फूल,
खिल जाया करते
आँगन में वे
गेंदे के पीले फूल,
महकाता था
तुलसी-बिरवा भी
घर-कमरा,
और बड़े होकर
मेघों के साये
चलते थे मेघों से
आगे होकर,
कलरव सुनके
नर-नारी भी
जाग उठे सोकर,
आँख-मिचौली
खेल रही होती थी
बिजली-धूप,
कैसा मोहक होता
सपने जैसा
मानो दृश्य अनूप,
लगता जैसे
वसुन्धरा का घर

हो भरा-भरा,
सुखदायक यह
सहज रूप,
शृंगार प्रकृति का
लगा साफ-सुथरा! ❑

4. एक ही लय

एक भी डाली
हवा के साथ अब
हिलती नहीं,
सूखे मरुथल को
जो सींचे वह
घटा घिरती नहीं,
हृदय में जो
मधुर रस घोले
मधुर लय
फूँक दे जो चेतना
मन-प्राण में
बन एक ही लय,
मर्म को छू ले
जो मीठी तान अब
मिलती नहीं,
नयन अपलक
जब निहारें
रूप सुन्दरतर,
उतर आए
साँझ साजे माँग को
सिन्दूर भर,
फूल जैसी लालिमा
संग सुरभि
अब खिलती नहीं,
ताप हरती
बरगदों की छाँह
अब मिलती नहीं! ❑

5. धूप

पूर्व दिशा से
आँगन में आकर
मुस्काती धूप
तुलसी के चौरे को
छूकर होती
पावन पूरी धूप,
पूछा करती
हाल-चाल वृद्धों के
पशु-पक्षी के
आतुरता से चूर,

बाग-बगीचे
पहुँच-पहुँच के
गली-गली की
माटी को छू-छू कर
घर की मुँडेर से
दीवारों तक
दूर पहुँच जाती,
दोपहरी में
ऊँचे-ऊँचे पहुँच
उतरकर,
उछल-कूद कर,
ताज़े मक्खन,
मथे हुए मट्ठे का,
सतनाजों का,
मक्का-रोटी, चटनी,
साग चने का
भोग लगाती धूप
ज्वार-बाजरा,
भुने हुए भुट्टों की,
निमकौरी की,
कटे हुए चारे की,
नीबू-अमिया,
महुवारे बागों की
सौंधी महक
हृदय में भरती,
अलसाई-सी,
पश्चिम जाती मूक,
सूर्य की साथी धूप! ❑

6. ध्येय

जग की सारी
पीड़ाओं से रब ने
पार लगाया,
हमने जगकर
अँधियारों में
ऐसा दीप जलाया,
अभी-अभी तो
सूरज निकला है
प्रकाश आया,
अभी-अभी रोली से
चित्रित कर
घर-द्वार सजाया,
श्री-सौरभ को
लुटा-लुटाके हर
फूल मुस्काया,
इस धरती पर
मूल ध्येय जो
सार्थक बन आया,
हमने अब पाया। ❑

1. प्रियंका गुप्ता

1. अनुभव

कोई सम्बन्ध
न जानना-मानना
अनुभव का
उम्र के साथ कोई
मत रखना
सवालों के घेरे में
सच या झूठ
फैसला खुद होगा
धरा जागेगी
सूरज की गर्मी से
कच्चे तजुर्बे
कमसिन उम्र ने
धरती पर
चाँद-तारों के संग
सूर्य भी रखा होगा। ❑

2. बचपन के दिन

याद आते हैं
बचपन के दिन
खेलते हुए
लड़ना-झगड़ना
कुट्टी करना
फिर एक हो जाना
गुट्टी फोड़ना
गेंद-ताड़ी खेलते
गिर पड़ना
गिर के सँभलना
मिट्टी के टीले
चढ़ के फिसलना
फूलों पे बैठी
तितली पकड़ना
हरी घास पे
लोटपोट होकर
ओस की बूँदें
आँखों पर मलना
माँ का हाथ से
हर कौर खिलाना

दूर देश की
कहानियाँ सुनाना
रात घिरे तो
तारों की छाँव–तले
आँचल ओढ़
माँ से लिपट सोना
वक़्त गुज़रा
हम बड़े हो गए
गुम हो गईं
पुरानी निशानियाँ
वो शरारतें
नानी की कहानियाँ

मन चाहता
काश! कोई लौटा दे
वो बीते पल
छोटी–छोटी खुशियाँ
नन्हें सपने
मासूम बदमाशी
पर पता है
फिर ऐसा न होगा
जो चला गया
लौट के नहीं आता
यादें सतातीं
अब यूँ ही जीना है
मीठी यादों के संग। ❑

10. डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा

1. सोनचिरैया

सोन चिरैया
जब भी तुम गाओ
मीठा ही गाओ
जो तुम मेरी मानो
नीड़ बनाओ
तिनका चुनकर
खुद ही लाओ
शेष अभी कहना–
छीन घरौंदा
कभी किसी पंछी का
नहीं सताओ
जीवन मंत्र यही–
मिट जाते हैं
बदनाम परिंदे
मान भी जाओ
सखि, जीवन जी लो
अमृत बाँटो, पी लो!! ❑

2. याद तुम्हारी

नई भोर –सी
दमकाती है मन
याद तुम्हारी
पल–पल है प्यारी
मुग्ध कली–सी
महकाती है मन
याद तुम्हारी
ज्यों सुरभि की झारी
प्यार पगी–सी
सरसाती है मन
याद तुम्हारी
यूँ रस बरसा री
कुंज गली–सी
भटकाती है मन
याद तुम्हारी
सब कुछ मैं हारी

सुनो न कान्हा!
तरसाती है मन
याद तुम्हारी
आओ कृष्ण मुरारी
संग हों राधे प्यारी!! ❑

3. रक्षाबन्धन

रक्षाबंधन
स्नेह अभिनंदन
प्रेषित की है
पाती नाम तुम्हारे
ओ भैया प्यारे
बाँचो भाव हमारे
नैनों से दूरी
समझो मजबूरी
आने का मन
है घर का बंधन
तेरी कलाई
ना रह जाए सूनी
रेशम डोर
संग दुआएँ दीनी
अक्षत आशा
है कुंकुम विश्वास
नयन–जल
भीगा तिलक सजा
मुस्कान नहीं
पर मन से गाया
मंगल–गान
सब सुख-खुशियाँ
हर्ष अपार
हो, मन उजियार
स्वस्थ जीवन
स्नेही हों परिजन
सजे कलाई
रेशम धागा बाँधा
प्यारी सी मेरी
मृदु बातों, यादों की
लो स्वीकार मिठाई। ❑

4. ओ घन श्याम

ओ घन श्याम
मुदित अभिराम
सजल हुए
धरा पर बरसे
और कभी यूँ
मिलने को तरसे
कौन सिखाता
सारी तुम्हें ठिठोली
सखी तुम्हारी
पुरवाई क्या बोली
भटकाती है
लेके तुमको संग
भला कहो तो
कित–कित जाती है
ज़रा तो जानो
कण–कण व्याकुल
बिना तुम्हारे
तुम न पहचानो
और कभी ये
मुक्त भाव से भला
कौन संदेसा
नदिया से कहते
उमड़ी जाती
वो बहते–बहते
सखा हमारे
ऐसे न भरमाओ
अब मान भी जाओ!! ❑

5. नई कोपलें

ज़रा देखो तो
नई कोंपलें छिपीं
इसी शाख पे
धीमे से खिड़की से
जैसे हमको
देख रही हैं प्यारी
घबराए–से
देखे भाव हमारे
करती रही
ये क्या ख़ूब इशारे
मानव–मन
है कैसा भरमाया
नियति को भी
ये समझ न आया
रूप कहाँ से पाया! ❑

6. पितरौ वन्दे

चंदा-सूरज
मुट्ठी में बाँध लिये
सागर सारे
पर्वत नाप लिये
अँधियारों पे
विजय पा गए हो
उजालों में क्यूँ
यूँ भरमा रहे हो?
हवा धूप भी
दासियाँ हों तुम्हारी
ममता नहीं
स्वर्ण की आब प्यारी
ऊँचे भवन
सारा सुख ख़ज़ाना
खुशियों-भरे
प्रीत के गीत गाना
व्यर्थ ही तो हैं
दे ही ना पाए जब
माता पिता को
तुम दो वक्त खाना
भूले गले लगाना। ❑

1. भावना सक्सेना

1. जीवन-राहें

जीवन-राहें
हम पत्थर सम
घिसती जातीं
अनुभव-लहरें
मन की राहें
इक कोरा कागज़
अश्रु–स्याही
रंग जाती कतरे
अनंत चाहें
तूफ़ानी समंदर
स्नेह-कंचन
कर जाए निर्मल
जीवन हो कविता। ❑

2. प्रेम के रिश्ते

प्रेम के रिश्ते
हारे अभिमान से
जब भी टूटे
टूटे झूठे मान पे
प्रेम के रिश्ते
हारे अभिमान से
सहते आए
पीड़ा तन मन की
कटु शब्दों से
होते क्षत–विक्षत
रक्त सम्बन्ध
ढहते, हो जर्जर
रीते गागर
प्रेम सुधा–रस को
तड़पे आजीवन
मुक्त न हुए
मर्यादा–दीवार से
टूटें नियम
तो छोड़ें रिश्ते साथ
रहे अहं की बात। ❑

3. स्त्री

भीत-शंकित
कर शक्ति संचित
लड़ती रही-
हवाएँ प्रतिकूल
राहों में शूल
साध लक्ष्य विजय
चलती रही
बाँधे रही सदियों
मर्यादा–सीमा
मन के पंख लगा
उड़ती रही-
तिरस्कृत, अभागी
अबला कहा
चोट अपनों से खा
मुस्काती रही
गुनगुनाती रही
गीत प्यार के
संगीत जीवन का
सबको सिखा
अपने घरौंदे में
धूप की डोरियों से
बुने नेह चादरें। ❑

4. महानगर

बढ़ती भीड़
उमसते जीवन
थके कदम
पल-पल जलते
आहें भरते
तो भी चलें सतत
धूप में भी ये
बना महानगर
महानरक
है कड़ी तपस्या
जीवन का सच ❑

5. वात्सल्यमयी

वात्सल्यमयी
ईंट की दीवारों में
भरती रही
ये जीवन के रंग
सदा से रही
धुरी परिवार की
स्नेह-सलिला
सिक्त करती रही
बचाती रही
जीवन-तपिश से
लुटाती रही
ममता अनमोल
कुछ न बोली कभी। ❑

12. तुहिना रंजन

1. जलपरी

झिलमिलाते
सितारों से सजने
वो जलपरी
जल-जीवन छोड़
उड़ने चली
सपनों के पंख ले
गगन पार
बादलों पे सवार
आँसू बहाता
सागर पुकारता
दिल का दु:ख
लहरों में छुपाता
छाती पीटता
तट से टकराता
हवा के संग
भेजता उस तक
बूँदों की पाती
नीर में भर पीर
तकता राह
करता इंतज़ार
बाँहें फैलाए
फिर एक समय
कुछ यूँ हुआ
छटपटाती
घायल हिरनी-सी
आकर गिरी
जल को तरसती
समन्दर में
लिपटी लहरों से
जैसे जी गई
सागर में मिलके
पी में समाई
जीना किसके संग
सीख यही पा गई। ❑

2. नन्ही-सी कली

उर भीतर
कौन गुनगुनाई
नन्ही-सी कली
तेरी आहट आई
तेरा स्पंदन
धड़का मेरे साथ
छलकी मैं, जो
तूने ली अँगड़ाई
तेरा क्रंदन
मधुरिम संगीत
तेरी लीलाएँ
सबको ही रिझाएँ
वारी-वारी मैं
बेल-सी बढ़ती तू
आँखों से बोले
भय, रोष, विद्रोह
सर के साथ
काँधे पे रखा हाथ
बूझ गई तू
ये सम्बल की भाषा
ऊँचा मस्तक
विश्वास भरे प्राण
चल दी आगे
मिला मान सम्मान
भेजा जो तुझे
अंजान राही संग
लगा कि जैसे
बिखर गया मन
सुनी जो हँसी
मीलों पार से आई
मन बगिया
फिर खिलखिलाई
देख तुझे यूँ
इक पहचानी-सी
छवि लजाई
तेरे उर में भी क्या
एक कली मुस्काई? ❑

3. प्रीत साँची हमारी

नैनों में छिपे
सावन-भादों सब,
बरसा किए
तोहे याद करके,
मेघा जलाए
बूँदें भी तड़पाएँ
तुम्हारे बिना,
जिया न लागे हाय!
ओ परदेसी!
बदरा संग भेजूँ
प्रेम की पाती;
पढ़ते आ जइयो।
आओगे जब,
लिपट तोसे तब
भीजूँ तो संग
बहे चूनर रंग,
जाऊँगी वारी,
प्रीत साँची हमारी।
भूल न जाना,
ये बिरहा की मारी
तके राह तिहारी। ❑

1. डॉ. उर्मिला अग्रवाल

1. वक्त की सत्ता

घंटाघर की
चारों घड़ियाँ बजीं
साथ-साथ ही
एक घड़ी पहले
न ही बाद में
एक ख़्याल उभरा
कारीगर ने
यह सोचकर ही
लगाई होगी
चारों ओर घड़ी, कि
हर दिशा से
देखा जा सके वक्त
मेरी बात पे
जाने क्यों हँस दिया
ये घंटाघर
मैंने पूछा तो बोला-
अरी पागल
इंगित करती हैं
ये घड़ियाँ कि
चारों ओर फैली है
वक़्त की सत्ता
वक़्त के कब्जे में है
यह ज़िन्दगी
भूलना मत सब
वक़्त के गुलाम हैं। ❑

2. अपनी पीड़ा

अक्सर मुझे
खींचती है सुराही
अपनी ओर
कहना चाहती है
शायद कोई
घना दर्द अपना
मैंने पूछा तो
बयाँ करने लगी

अपनी पीड़ा
कुछ इस तरह
मेरा सम्बन्ध
सदा ही जोड़ा जाता
क्यों मदिरा से
जाम से औ साक़ी से
यह तो तुम्हें
सोचना है कि मेरा
उपयोग हो
किस काम के लिए
दे सकती हूँ
मैं शीतल जल भी
यदि चाहोगे
केवल नशा नहीं
तृप्ति भी देती
शीतल जल भरी
बदनाम सुराही। ❑

3. आ मिला चाँद

चाँद गया है
मावस से मिलने
साथ ले गया
बारात सितारों की
ध्रुव तारे को
है टाँका पगड़ी में
कुर्ता पहना
झिलमिल करता
सजा रही है
सेहरे की लड़ियाँ
रजनीगंधा
सुरभित है सब
धरा आसमाँ
अमावस रात को
आ मिला चाँद
जिसको जीवन में
कोई न चाहे
उसके आँचल में
आ छिप गया चाँद। ❑

4. अकेलापन

बीमार हूँ मैं
पर पास न कोई
अकेलापन
धारण करता है
कितने रूप
ये मैंने आज जाना
कविताओं में
रोमानी लगता है
तन्हाई शब्द
पर हकीकत में
होता है यह
कितना भयंकर
इसकी पीड़ा
कोई भुक्त-भोगी ही
जान सकता
विचलित करती
आहें-कराहें
तोड़-तोड़ डालती
यह तन्हाई
छेद-छेद डालती
सोचती है क्यों
छोड़ के चले जाते
वृद्धावस्था में
सब अपने हमें
पता नहीं क्यों
कलेजे के टुकड़े
बेटे-बेटियाँ
भूले से न पूछते
कि माँ कैसी हो
काँपते देखकर
ये बूढ़े हाथ
वे मुँह फेर लेते
वितृष्णा होती
झुर्री–भरे हाथों से
उन बच्चों को
जिन्हें सहलाया था
जाग-जाग के
रात और दिन इन
ममतालु हाथों ने। ❑

14. हरकीरत 'हीर'

1. लिख दो पाती

तेरे लिए हैं
प्रिय दीप जलाए
तेरे लिए ही
अरमान सजे ये
तेरे लिए ही
आँगन–ज्योत सजी
तेरे लिए ही
देख बाती जगी ये
सजी रंगोली
तेरे लिए साजन
वन्दनवार
हँसी तेरी ख़ातिर
तेरे लिए ये
उतरे हैं सितारे
तेरी ख़ातिर
आँखों से अश्क बहे
तेरी ख़ातिर
हवा ख़ामोश रही
तेरे लिए ही
चाँद छुपा आज है
तेरी ख़ातिर
देख रात सजी है
जले उदास
दीपक गुमसुम
लिख दो पाती
प्रेम की फिर तुम
भर दो मीठी
प्रीत की सरगम
बिन प्रीत के
पिया जले न दीप
दिल में है अँधेरा!! ❑

15. अनुपमा त्रिपाठी

1. लहर चली

लहर चली
सागर में सिमटी
हुई बावरी
मिटने को मचली
पल न माने
नित ऊँची उठती
कल-कल सी
अपनी सीमाओं में
करे हिलोर
उमंग पोर-पोर
बनाती जाती
स्वनिर्मित किनारा।
जीवट मन
वेग से ओत-प्रोत
आतुर तन
जिजीविषा से भरी
करे जतन
छूम छनन-छन
बहती चली
ऊँची उठती चली
बहे-बनाए
जो भी धुरी छू जाए
फिर उठती
मिटने को उठती
हर लहर
बनाती है अपना
नित नया किनारा। ❑

2. धारा हूँ नदिया की

छवि सुहाए
सूरतिया पिया की
मनवा भाए
मूरतिया पिया की
नदिया हूँ मैं
सागर पियु मेरो
बहती जाऊँ
कथा सागर तक
कहती जाऊँ
पियु में समा जाऊँ
पीड़ा राह की
सकल सह जाऊँ।
बन में ढूँढूँ
धारा हूँ जीवन की
घन बिचरूँ
ज्यूँ धार नदिया की
कठिन पंथ
अलबेली-सी रुत
मोहे सताए
जिया नाहीं बस में
पीर घनेरी -
मनवा अकुलाए।
बिपिन घने
मैं कित मुड़ जाऊँ
पिया बुलाए
मन चैन न पाए
बढ़ती जाऊँ
डगर चले मन
रुक ना पाए
अब कौन गाँव है
कौन देस है
नगरिया पिया की
रुक ना पाऊँ
कल-कल करती
बहती जाऊँ
छल-छल बहूँ मैं
सागर को पा जाऊँ। ❑

16. डॉ. आरती स्मित

1. शुक्रिया शिशु!

शुक्रिया शिशु
तुमने दिया गौरव
मातृत्व का भी
तुमने ही तो दी हैं
सुकोमल-सी
अनछुई भावों की
अनुभूतियाँ।
मीठी तोतली बोली
'माँ' पुकारती
और मैं हो उठती
निहाल, इस
स्नेह-सुधा-रस से
आप्लावित हो।
मैंने पाई तुमसे
'माँ' की गरिमा
गुरुता व पूर्णता
से भीगा मन
आलोड़ित होने लगा।
शुक्रिया बेटे!
तुमने लौटा दिया
बचपन ही
खो गया था जो कहीं
अतीत की ही
उदास गर्दिश में।
आज अधर
थिरकने लगे है
पाकर प्यारा
अपना बचपन
तुममें- तुमसे ही। ❑

2. ठूँठ

मैं वही ठूँठ
अवहेलित शुष्क
आज अपत्र
प्राणरस-रहित।
नहीं बनते
अब घोंसले यहाँ
शाखाओं पर
नहीं लगती
चौपाल भी इधर,
न ही छाया है
न बैठक पंचों की;
बच्चों की टोली
नहीं खेलती खेल
नहीं मचाती
ऊधम इर्द-गिर्द;
मेरी ये बाहें
उन्हें बुलातीं पास
आँखें ढूँढ़तीं
पुराने राहगीर
जिन्हें, वर्षों दी
घनी छाँव अपनी।

सोई स्मृतियाँ
करवट ले रहीं,
अवचेतना
उलीच रही राख
कि जीवंत हो
कहीं कोई भी रिश्ता,
आकर कहे,
नहीं भुला पाया मैं
तुम्हारा नेह!
तुम्हारी घनी जड़ें
अब तलक
गीत सुना जाती है।
जीर्ण-शीर्ण मैं
भग्न मेरी शिराएँ
मुँह ताकते
धूमिल भविष्य का,
कल क्या होगा?
कलाकृति बनेगी
कोई अनाम
बनना होगा मुझे
ओल्ड होम का हिस्सा। ❑

3. बच्चा

अन्तर्मन में
पलता एक बच्चा
ढूँढ़ रहा है
फिर माँ का आँचल
पिता का साया
मित्र की अठखेली
बड़ों का प्यार।
वह ढूँढ़ रहा है-
नीम की छाँव,
अपना प्यारा गाँव
रेत में बनी
अपनी परछाई
आँखमिचौली
खेलती लहरियाँ।
आज भी वह
ढूँढ़ता माँ की गोद,
उसकी लोरी,
पिता से शरारत
साथी-संगी से
बेर छीन ले जाना।
अन्तर्मन में
बढ़ता वह बच्चा
पुकारता है
अपना बचपन
बढ़ती उम्र
दबाव बढ़ाती है
मासूम पर
दम तोड़ता वह,
ढूँढ़ रहा है
आज भी नेह-धार
जीवंतता के लिए। ❑

17. सुशीला शिवराण

1. सावन-झड़ी

सावन-झड़ी
भीगे गोरिया खड़ी
आओ साजन
तुम बिन सावन
जलाए जिया
पाँवों की पैंजनियाँ
हाथ-कँगना
नयनों का कजरा
केश-गजरा
माथे पर बिंदिया
होठों की लाली
सूना माँग सिंदूर
फटा बदरा
बह गया कजरा
बहा आलता
बह गई है हिना
बहे नयन
आसमाँ है उदास
सजन नहीं पास। ❑

18. शशि पाधा

1. दु:ख का घड़ा

दु:ख का घड़ा
उड़ेल दिया मैंने
दबा दिया था
आँगन के कोने में
बो दिए यूँ ही
गीली माटी में बीज
चिर सुख के
अंकुरित हो गए
खिले थे फूल
अब जीवन–क्यारी
पुष्पित मुस्कान–सी। ❑

2. ढूँढती साँसें

नहीं जानती
क्यों लेखनी है कुंद
क्यों भाव मंद
कहाँ खोई कल्पना
कौन दिशा में
बहती संवेदना
शब्द हैं मौन
अधर चुपचाप
ढूँढ़ती साँसें
हवाओं में संगीत
रूठी–सी प्रीत
कि मन फिर गाए
सावन लौट आए। ❑

19. सुदर्शन रत्नाकर

1. आहट

आहट हुई
आता ही होगा कोई
शायद वही
कलियाँ मुस्कराईं
घूँघट खोले
रंगों की छटा छाई
धरा नहाई
आसमान निखरा
सरसों खिली
सुगंधित हवाएँ
करतीं मस्त
छूट गया आलस्य
विदा हो गई
ठिठुरन की रातें
लाईं सौगातें
भँवरों की गुंजार
कुहू की कू–कू
मन को है सुहाई
वसंत ऋतु आई। ❑

20. डॉ. अनीता कपूर

1. जन्मों की गाथा हूँ मैं

तुम्हारी याद–
ओस में भीगी मैं
या बादलों का
पसीना भिगो गया
रही मैं प्यासी
तू बन जा नदिया
हुई मैं रेत
तेरा दिल फिसला
हूँ हवा नहीं
ख़ुशबू हूँ तेरी मैं
न कोई ख़ौफ़
न डर ज़हर का
तू इश्क मेरा
अनारकली हूँ मैं
तू कृष्ण मेरा
तेरी ही राधा हूँ मैं
जन्मों की गाथा हूँ मैं। ❑

2. रो दिये रिश्ते

रिश्ते अजीब
कभी इश्क अजीब
न पूरे कैद
हो पाए हैं, और न
पूरे आज़ाद
खिलखिलाते हुए
रो दिए रिश्ते
देख उम्र छोटी पे
कभी उम्र ही
रो दी छोटे रिश्तों पे
दु:खी है हवा
दर्द बेबाक बहा
फफक पड़ी
खुद पर लोरियाँ
हँस रही दूरियाँ । ❑

21. वरिन्दरजीत सिंह बराड़

1. ज़िन्दगी

टूटे सपना
जब छोड़े दुनिया
कोई अपना
दु:ख जो बाँट लेते
मिले न साथी
कौन बने सहारा
साथ जो छूटा
अपने ही सगों का
दिल है टूटा
कोई दर्द-ए दिल
समझे नहीं
ऐसे बना नासूर
बिना कसूर
यह कैसी है सज़ा
मन बेचारा
आज है बेसहारा
ढूँढ़े किनारा
रोज़ टूटता हूँ मैं
स्वयं जुड़ता
अनबुझी ज़िन्दगी
उलझी है ज़िन्दगी। ❑

2. गरीब की ज़िन्दगी

ओ री ज़िन्दगी!
ये उलझन खड़ी
तू ही तो बता
यूँ टुकड़ों में भला
मिलती खुशी
बहती है नदिया
गमों से लदी
गुम है कहाँ खुशी
ज़र्रे-ज़र्रे में
बहुत इसे ढूँढ़ा,
'गर मान लें
यही नाम ज़िन्दगी

है उलझन
फिर भी वहीं खड़ी,
गरीब–घर
ये गम डेरा डाले
रहता सदा
जीने का अधिकार
उन्हें न मिले
खुशी का उपहार
खुला जीवन–द्वार। ❑

22. डॉ. अमिता कौण्डल

1. श्यामल मेघ

श्यामल मेघ
रिमझिम-सी बूँदें
मधु संगीत
भीगा घर-आँगन।
मन बाबरा
गुनगुनाए जैसे
मधुर गीत।
हृदय आनन्दित
माँ के स्नेह सा,
बूँदों की शीतलता
शिशु स्पर्श-सी
वर्षा ऋतु-आनन्द
छाया है चहुँ ओर। ❑

2. तुमने कहा

तुमने कहा-
मैं ख़ुश हूँ बहुत,
कहो प्रीतम
कब देखा तुमने-
सूरजमुखी
खिलता सूर्य बिना,
देखा है कभी?
प्रियवर तुमने
बिन जल के
मछली को जीवित,
तुम ही तो हो
मेरी सारी ख़ुशियाँ
जब से मोड़ा
तुमने मुखड़ा ये
एकाकी हूँ मैं
माटी-रची काठ को
ज़िन्दा रखा है
कि कभी होगी तुम्हें
मेरी भी सुध
मैं और तुम होंगे
इस जन्म में 'हम'। ❑

23. अनिता ललित

1. घर की तलाश

'सुनो न पापा!
क्यों होते परेशान?
रहूँगी सदा
आपके समीप मैं
बनके बेटा
न समझना मुझे
कभी भी बोझ!'
मन में घबराते
पापा मुस्काते
थोड़ा सकुचाते से
हौले कहते-
'मेरी प्यारी बिटिया!
नाज़ मुझे है
तुझपे अत्यधिक!
पर है रीत,
तुझको तो जाना है
अपने घर!
बसाना है संसार
एक अलग!'

उदास हो बिटिया
हो जाती मौन!
'ओ मेरे प्यारे भैया!
लाडले भैया!
तुम ख़ूब पढ़ना!
आकाश छूना
सफलता के नए!
बाधा हो कोई
इन राहों में कभी ,
मुझे बताना!
सदा पाओगे मुझे
अपने पास!

भैया कुछ सोचता,
हँसके कहता,
नासमझ बहना!
क्यों परेशान?
मैं ठहरा लड़का!
घर का दीप!
राह अपनी ख़ुद

बनाऊँगा मैं!
तुम्हें तो जाना होगा
अपने घर
किसी दूल्हे के संग!
चुप हो जाती
उदास हो बहना!

माँ है व्याकुल
आँखों में भरे आँसू
करती विदा
कलेजे का टुकड़ा!
क्यों बनी रीत?
'ओ मेरे पतिदेव!
हूँ अर्द्धांगिनी
मैं जीवन संगिनी,
सहभागिनी,
आजीवन आपकी
अर्पित तुम्हें
वो सभी कुछ सदा
है जो भी मेरा!

आपके सभी दु:ख,
कठिनाइयाँ
हैं अब सिर्फ़ मेरी!
बनूँगी ढाल!
काँधे से काँधा मिला
चलूँगी साथ!
आपसे मेरी बस
यही विनती-
मेरे कर्त्तव्यों में भी
हों भागीदार!
मेरे प्रियजनों को,
उनके प्रति
मेरे कर्त्तव्यों को भी
दें आप मान!

माथे पे सिलवटें,
आँखों में चिंता
अनमनाए पति!
बोले, 'ये कैसे
संभव हो पाएगा?
वो नहीं अब
रहा तुम्हारा घर!
और ये मेरा!
देखो-भालो, समझो!
है अपनाना
तुम्हें, हम सबको
जैसे हैं हम!
यहाँ की मर्यादा का
करो पालन!
ससुराल तुम्हारा,
नहीं मायका!

कोई शर्त तुम्हारी
नहीं चलेगी!'
उदास होके पत्नी
चुप हो गई!

किससे अब पूछे–
'अपना घर?
कौन अब अपना?
इस धरती पर??' ❑

24. कृष्णा वर्मा

1. स्वागत सदा

स्वागत सदा
ऋतुराज तुम्हारा
चली बयार
दिशा-दिशा जा घूमे
धरा को चूमे
घुला फिज़ा में प्यार
बदल रहे
मौसम के तेवर
ऋतु उत्सुक
करने को शृंगार
घट रहा है
कद शीत ऋतु का
सर्द हवा भी
आ लगी छिटकने
मन्द ख़ुमार
तज नीड़ों का मोह
विहग-वृंद
करें नभ-विहार
विविधवर्णी
कुसुम खिल रहे
उन्मत्त ऊर्वी
हो रही गुलज़ार
जगी सुगंध
मृदु आम्रकुंज की
पिकी बौराई
मीठी करे पुकार
दुल्हन जैसी
सजी धरती करे
सुमनों से शृंगार। ❑

2. नदिया चली

नदिया चली
जलधि से मिलने
व्याकुलमना
शिखर-चरण को
त्याग बावरी
गिरी घाटी की गोद
अटकलों को
सहर्ष सहारती
प्रेम दीवानी
निज धुन में गाए
बहती जाए
दबे पाँव निर्घोष
कोमलांगिनी
पाहन चीरे नीर
क्षुब्ध न होती
अपितु सहलाके
दे सुमंत्रणा
बनी आज्ञाकारिणी
बेखबर-सी
शीत, धूप, मेह से
सिक्त नेह से
सिन्धु की ये प्रेयसी
छूटे कगार
सम्बन्धहीन चली
पाने अतल प्यार। ❑

25. ज्योतिर्मयी पन्त

1. हाथ थाम लें

वे झुके काँधे
हाथी घोड़े बने जो
अँगुली थामें
चलाया व सिखाया
शब्द बोलना
भावी सुख हित वे
बोझ सर पे
ज़िम्मेदारियों का भी
खुशी से लिये
हँसी–किलकारी पे
करते रहे
निछावर दिन–रैन
हुए निहाल
वक़्त की करवट–
झुके वे काँधे
झुर्रियों–भरे मुख
कुछ न बोलें
व्यर्थ हुआ जीवन
आस लगाए –
खोजें अपनापन
बच्चे अपने
हँसें बोलें उनसे
हाथ थाम लें
चमकती लौ जैसे
क्षीण दीये में
भरें उत्साह–ओज
संजीवनी दें
पुनर्जीवन जगे
संतान–सुख मिले। ❑

26. शशि पुरवार

1. प्रेम की बाती

रिश्तों में खास
विश्वास की मिठास
प्रेम की बाती
रौशनी की बहार
बाँटें खुशियाँ
हर दिन त्योहार
हीरे से ज़्यादा
अनमोल है प्यार
है जमा पूँजी
रिश्तों की सौगात
साजन–संग
बसाया है संसार
नए बंधन
स्नेहिल उपहार
दिलों की प्रीत
अमूल्य पतवार
मन उमंग
शीतलता व्याप्त
पल हों ऐसे
घर मने दिवाली
हर दिन त्योहार। ❑

❑❑❑

चोका (लम्बी कविता) पहली से तेरहवीं शताब्दी में जापानी काव्य विधा में महाकाव्य की कथा-कथन शैली रही है। मूलत: चोका गाए जाते रहे हैं। चोका का वाचन उच्च स्वर में किया जाता रहा है। यह प्राय: वर्णनात्मक रहा है। इसको एक ही कवि रचता है।

'ओक भर किरनें' (डॉ. सुधा गुप्ता) और 'मिले किनारे' (रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' एवं डॉ. हरदीप कौर सन्धु) संग्रहों के बाद चोका के क्षेत्र में सम्पादित संग्रह का यह प्रथम प्रयास है।

यह एक संयोग ही है कि 'उजास साथ रखना' संग्रह के रचनाकार अधिकतम महिलाएँ ही हैं।.... सबकी अपनी अभिरुचियाँ हैं, अपनी सीमाएँ हैं, अपने अनुभव हैं। हम तीनों ने इसके सम्पादन में लगभग छह महीने अधिक लगा दिए हैं; ताकि हिन्दी के इस प्रथम संग्रह को बेहतर ढंग से सम्पादित किया जा सके।

(भूमिका में से)

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

शिक्षा : एम. ए., हिन्दी (मेरठ विश्वविद्यालय),बी. एड्.।

प्रकाशन : माटी, पानी और हवा, अँजुरी भर आसीस, कुकड़ूँ कूँ, हुआ सवेरा, अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो, हम चाँद बनेंगे (कविता-संग्रह), मेरे सात जनम (हाइकु-संग्रह), मिले किनारे (ताँका और चोका संग्रह), धरती के आँसू, दीपा, दूसरा सवेरा (उपन्यास), असभ्य नगर (लघुकथा-संग्रह), खूँटी पर टँगी आत्मा (व्यंग्य-संग्रह), भाषा-चन्द्रिका (व्याकरण), रोचक बालकथाएँ , फुलिया और मुनिया (बालकथा), अनेक लघुकथाएँ अनूदित। 'यादों के पाखी' सहित 20 सम्पादित संग्रह।

ई मेल : rdkamboj@gmail.com

मोबाइल : 9313727493

डॉ. भावना कुँअर

शिक्षा : हिन्दी व संस्कृत में स्नातकोत्तर उपाधि, बी.एड्., पी-एच.डी. (हिन्दी) , तीन विषयों में डिप्लोमा।

प्रकाशित पुस्तकें : तारों की चूनर, धूप के खरगोश (हाइकु-संग्रह), साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर (पी-एच.डी. का शोध-प्रबन्ध), अक्षर सरिता, शब्द सरिता, स्वर सरिता (हिन्दी भाषा-शिक्षण की शृंखला)

संपादन : चन्दनमन (हाइकु-संग्रह), भाव कलश (ताँका-संग्रह), यादों के पाखी (हाइकु-संग्रह), गीत सरिता (बालगीतों का संग्रह - तीन भाग)

संप्रति : सिडनी यूनिवर्सिटी में अध्यापन ।

ई मेल : bhawnak2002@gmail.com

डॉ. हरदीप कौर सन्धु

शिक्षा : बी. एससी., बी.एड्. एम.एस. सी. (वनस्पति विज्ञान), एम. फिल., पीएच.डी.

प्रकाशन : मिले किनारे (ताँका और चोका संग्रह), चन्दनमन में हाइकु तथा भाव-कलश में ताँका प्रकाशित।

संपादन : यादों के पाखी (हाइकु-संग्रह)

हिन्दी-पंजाबी की अंतर्जाल-पत्रिकाओं में कविताएँ, हाइकु, ताँका तथा चोका, लघुकथा प्रकाशित। वेब पर हिन्दी हाइकु, त्रिवेणी (ताँका-चोका और माहिया), हाइकुलोक (पंजाबी-हाइकु) ब्लाग प्रकाशित।

सम्प्रति : सिडनी (आस्ट्रेलिया में) में अध्यापन।

ई मेल : hindihaiku@gmail.com